देश के १३वें राष्ट्रपति महामहिम
श्री प्रणब मुखर्जी

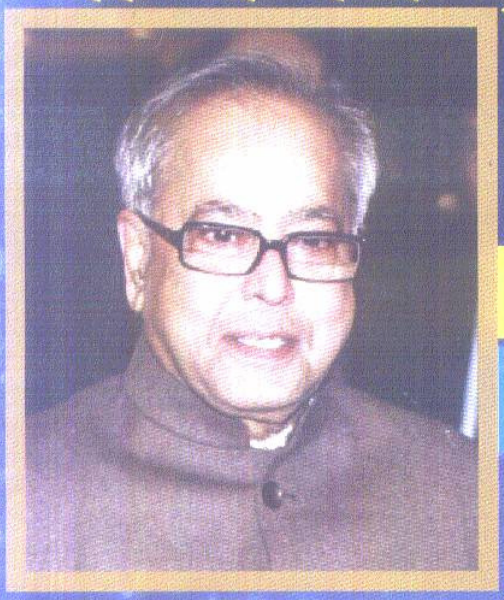

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
की
शुभकामनाएँ एवं हार्दिक बधाई!

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• जून-जुलाई २०१२ • वर्ष ६३ • अंक ६-७

मूल्य : ₹.१० प्रति, वार्षिक ₹.१००

डॉ. जयप्रकाश मूंदड़ा

श्री सुरेन्द्र लाठ

श्री ओंकारमल अग्रवाल

एक नाम, एक संविधान एवं एकल सदस्यता संबंधित ऐतिहासिक निर्णय

श्री विनय सरावगी

श्री कमल नोपानी

श्री विजय गुजरवासिया

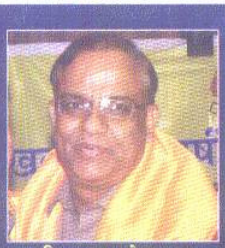

श्री पवन गोयनका

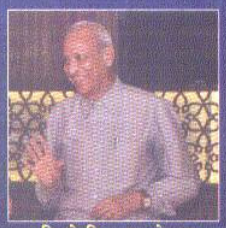

श्री नेमीचन्द पोद्दार

श्री संतोष सराफ

श्री विजय किशोरपुरिया

Caring for Land and People...

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Ferro Alloy Producer & Mineral Processors

- ***IRON ORE*** *- BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *- BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***
- ***SPONGE IRON*** *LUMPS & FINES*

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com, GRAM: "RUNGTA"

REGISTERED OFFICE

8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA 700017, INDIA
Phone: 033-2281 6580/3751; Fax: 91-33-2281 5380; Email: rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION

RUNGTA OFFICE

MAIN ROAD, BARBIL 758035, DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 275221/277481/ 441; Fax: 91-6767-276161
Email: rungta_bbl@yahoo.co.in, GRAM: "RUNGTA"

SPONGE IRON DIVISION

ORISSA
RUNGTA OFFICE
MAIN ROAD, BARBIL 758035
DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 27689/277391/021
Fax: 91-6767-277011

JHARKHAND
RUNGTA OFFICE
SADAR BAZAR, CHAIBASA - 833201
DIST- SINGHBHUM(W), JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256621/256321
Fax: 91-6582-257521

समाज विकास

◆ जुन जूलाई २०१२ ◆ वर्ष ६३ ◆ अंक ६-७ ◆ एक प्रति - १० रु. ◆ वार्षिक १०० रु.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
चिट्ठी आई है	४-५
सम्पादकीय : राष्ट्रसंघ चार्टर दिवस – ***सीताराम शर्मा***	७-८
अध्यक्षीय : राम बचायें ऐसी महँगाई से – ***हरि प्रसाद कानोड़िया***	९
बहुत जरूरी है जीने के लिए अनुशासन – ***संतोष सराफ***	१०
Free Schlorship	११
मिलनी के रूप में पुष्प गुच्छ देकर करें सम्मान – ***रामअवतार पोद्दार***	१२
पदाधिकारी सूचि	१३
एक नाम, एक संविधान एवं एकल सदस्यता	१५-२०
संगोष्ठी – राजनैतिक चेतना एवं भागीदारी	२१-२४
सम्मेलन के माननीय सदस्यों से एक निवेदन – ***कमल नोपानी***	२५
अपने बच्चों को स्वयं कमजोर बनाती माँये – ***भंवर लाल गट्टानी***	२६
चरित्र क्रांति का दौर शुरु हो – ***ललित गर्ग***	२७
प्रान्तीय समाचार-१ – पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन	२९
नाटक – हमारी बहुएं - बेटियों से प्यारी – ***हरिप्रसाद कानोड़िया***	३१-३२
सूचनासार-१ – मारवाड़ी सम्मेलन ने बांटी राहत सामग्री	३२
प्रान्तीय समाचार-२ – छत्तीसगढ़ मारवाड़ी सम्मेलन	३३
प्रान्तीय समाचार-३ – बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन	३४-३५
सूचनासार-२ – उच्च शिक्षा हेतु सम्मेलन ने दिये २.५० लाख रुपये	३५
प्रान्तीय समाचार-४ – उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन	३६
स्थायी समिति की बैठक	३७
सूचनासार-३ – बिहार के उप-मुख्य मंत्री सुशील मोदी का स्वागत	३७
सूचनासार-४ – भवन निर्माण उप समिति की बैठक	३८

स्वत्वावधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ◆ १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७००००७
फोन : ०३३-२२६८ ०३१९ ◆ email: aimf1935@gmail.com
के लिये श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा
सीडीसी प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित
प्रधान संपादक : सीताराम शर्मा
प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है

वर्तमान परिस्थितियों का दर्पण

मई २०१२ के अंक में ललित गर्ग ने संसद के लिये शुद्ध सांसे चाहने के प्रयास में वर्तमान की परिस्थितियों का दर्पण दिखा दिया है। आपके लेख में दर्द भरा पड़ा है।

किसी समस्या सम्बन्धी किसी भी मंत्री को पत्र लिखो - - पर जवाब नदारत। जनता की समस्या से उन्हें क्या लेना देना। मंत्री भाषणों में समस्या के समाधान बताते तो है पर समाधान जरूरतमन्द तक जाता ही नहीं। वर्तमान सिर्फ भाषणों पर सीमित है।

मंत्रियों के सुझाव पर मतलब-बेमतलब के व्यक्तियों को पद्मश्री, पद्मभूषण दे दिया जाता है। इससे समाज को कोई सकारात्मक सोच भी नहीं मिलती।

इसी प्रकार जिसे चाहें राज्य सभा की सदस्यता दे दी जाती है। अयोग्य व्यक्तियों को भी सांसद बना दिया जाता है। इन्हें सांसद बनाने वाले और नामजद करने वाले सभी मनमानी कर रहे हैं। समाज का इससे कोई लाभ नहीं।

– वास्तुशास्त्री श्यामलाल जालान
कोलकाता

स्वजनों का स्नेह परिचय

काफी समय से 'समाज विकास' व अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का परिचय प्राप्त करता रहा हूँ। 'समाज विकास' निरन्तर मिल रहा है। 'समाज विकास' के माध्यम से भारत में फैले हमारे स्वजनों का परिचय-स्नेह बराबर मिल रहा है; इस सबके लिए आपका आभार।

समाज विकास को साहित्यिक-सांस्कृतिक रूप से सुदृढ़ बनाते रहें, यह अभिलाषा है। दो पृष्ठ राजस्थानी संस्कृति, मायड़ भाषा पर और दो पृष्ठ राष्ट्रभाषा हिन्दी को, उसकी साहित्यिक परम्परा के अनुरूप जिनमें creative सोच का लेखन हो – हमारा मारवाड़ी पाठक संस्कारित होते हुए साहित्यिक शीर्ष को छूने में सक्षम होगा।

– प्रो. चंद्रभानु भारद्वाज
सम्पादक संप्रेषण
११९, श्रीजी नगर, दुर्गापुरा, जयपुर-३०२ ०१८

राजस्थानी रचनाएं अच्छी लगी

'समाज विकास' अब निरन्तर मिल रहा है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन से संबंधित सभी समाचार मिल रहे हैं। विशेष कर आपके संपादकीय को ध्यान से पढ़ती हूँ क्योंकि आपकी अत्याधुनिक नजर समाज के उत्थान के लिए सदैव सजग रही है। राजस्थानी रचनाएँ बहुत ही अच्छी लगीं। साहित्य महोपाध्याय श्री नथमल केड़िया जी हिन्दी में तो अपने ललित गद्य के लिए साहित्य जगत में अपना विशिष्ट स्थान रखते ही हैं, राजस्थानी में पढ़ने का अवसर 'समाज विकास' द्वारा मिल रहा है, यह सुखद है। 'सुख आपणै आस पास रखते' बहुत ही अच्छा लगा। पुनः धन्यवाद।

– डॉ. वसुंधरा मिश्र

६४ए, नीमतल्ला घाट स्ट्रीट, कोलकाता - ७०० ००६

कॉकटेल पार्टी की निन्दा हो..

समाज विकास - मई २०१२ अंक में सम्मेलन के संयुक्त मंत्री श्री संजय हरलालका का आलेख – विवाह समारोह में कॉकटेल पार्टियां क्यों? पढ़ा तो उन्हें इस सामाजिक विसंगति पर कलम चलाने हेतु साधुवाद देने का मन हुआ। जिस बेवाक व आकर्षक भाषा शैली में हरलालका जी ने आधुनिकता का लबादा ओढ़े संस्कारिक मूल्यों का मखौल उड़ाते इस प्रचलन की त्रासदी पर अपने विचार रखे हैं वे पठनीय हैं, मर्मस्पर्शी हैं, विचारणीय हैं।

पश्चिमी संस्कृति को अपनाने की अंधी दौड़ में हमारा समाज और कितना संस्कार-च्युत होगा इसकी कल्पना मात्र ही गहन अंधकार का बोध करवाती है। शिक्षा के परिपेक्ष में समाज पहले की तुलना में कई गुना समृद्ध हुआ है मगर वैचारिक पृष्ठभूमि पर यह मूढ़ का मूढ़ ही नजर आ रहा है। जो इतना भी नहीं सोच पा रहा है कि – महा प्रतापी सूर्य भी जब पश्चिम दिशा में पहुंचता है तो उसे भी अस्त होना पड़ता है।

परिवार के मांगलिक समारोहों में कॉकटेल पार्टियों का यह प्रचलन निःसन्देह संस्कारिक पतन का द्योतक है, निन्दनीय है। अन्त में यही कि –

इसे पतन का नाम दें, या समझें उत्थान।
अब तो मदिरापान को, लोग समझते शान।।

– जयकुमार रुसवा
७७, पाथुरिया घाट स्ट्रीट
कोलकाता - ७०० ००६

चिट्ठी आई है

सत्यमेव जयते

समाज विकास का नया अंक मई २०१२ का मिला। इस अंक में श्री हरि प्रसाद कानोड़िया जी का लेख "**म्हारो लक्ष्य राष्ट्र रि प्रगति**" में आपने समाज में हो रहे शादी विवाह व अन्य समारोहों में फिजूलखर्ची एवं आडम्बर पर प्रहार करते हुए लिखा कि इस तरह के फिजूलखर्ची से समाज की आत्मा को क्षंकारती है। सभी एक दूसरे पर अंगुली उठाते हैं परन्तु समाज का कोई भी एक शेर आगे बढ़ कर अपने घर से इसे रोक नहीं सकता।

आपने समाज में सामाजिक चेतना के माध्यम से इन बुराईयों को दूर करने का सभी से आह्वान भी किया। सम्मेलन पिछले कुछ दशकों से इन बुराईयों पर नियंत्रण करने का प्रयास करता रहा है। स्व. भंवरमल सिंघी जी का नाम इसलिए बार बार जिक्र होता है कि उन्होंने खुद को सादगी के साथ रखते हुए समाज की कई बुराईयों पर प्रहार किया था। इतिहास तभी बनाया जा सकता है जब सम्मेलन इस दिशा में कुछ ठोस प्रस्ताव ग्रहण कर उसे कड़ाई से लागू करने के लिए अग्रसर हो। संभवत; कुछ समय के लिए इसका एक तबके से विरोध सामने आये। इसी विरोध से जनव्यापी समर्थन भी तेजी से उभर कर सामने आएगा। कानोड़िया जी एक सक्षम व योग्य व्यक्ति हैं। आपमें इच्छा शक्ति भी प्रबल है साथ ही सामर्थ्यवान व बुद्धिजीवी व्यक्तियों का उनको समर्थन भी मिला हुआ है। देरी तो है बस ठोस निर्णय लेने की है।

दुसरी तरफ आपके संपादकीय "**सत्यमेव जयते**" में भी आपने इन सभी मुद्दों को छुने का प्रयास किया है। हालांकि सम्मेलन के कार्यों की तुलना आमिर खान के इस धारावाहिक से आपने कर सठीक उदाहरण प्रस्तुत करने का भरपुर प्रयास किया है। परन्तु मेरी सोच है कि सम्मेलन के कार्यों की बराबरी कदापी संभव नहीं है। सम्मेलन ने जो कुछ भी किया व वास्तविकता के साथ किया। जबकि "**सत्यमेव जयते**" एक व्यवसायिक धारावाहिक है जिसे सामाजिक भावनाओं का व्यवसाईकरण की संज्ञा भी दी जा सकती है। श्री आमिर जी की भावना सही है पर इस तरह के व्यवसायिक धारावाहिक से समाज को कभी न तो लाभ हुआ है ना ही भविष्य में होने की कोई संभावना है।

– शम्भु चौधरी
एफ.डी.- ४५३/२, साल्टलेक सिटी
कोलकाता-७०० १०६

असमः

पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन

संपादक, पुर्वांचल प्रहरी के विरुद्ध प्रस्ताव

गुवाहाटी – १५ जुलाई २०१२ को प्रांतीय अध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल की अध्यक्षता में आयोजित कार्यकारिणी की विशेष सभा में निम्न प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किये गये :

१) श्री जी. एल. अग्रवाला द्वारा की जा रही पीत पत्रकारिता समूचे मारवाड़ी समाज के हितों के विपरीत है। आज की यह सभा उनके द्वारा समय-समय पर सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष सहित अन्य लोगों के विरुद्ध किए जा रहे चरित्र हनन के कुत्सित कार्य की घोर निंदा करती है।

२) आज की सभा समाज बंधुओं से अनुरोध करती है कि जी. एल. अग्रवाला के प्रतिष्ठान से प्रकाशित समाचार पत्रों की सदस्यता बंद कर व उन्हें विज्ञापन आदि देना बंद कर उसके साथ हर प्रकार का असहयोग करें।

३) इस प्रस्ताव को पूर्वोत्तर की मारवाड़ी समाज तक पहुँचाकर समस्त समाज बंधुओं से जी. एल. अग्रवाला का बहिष्कार करने व हर प्रकार से असहयोग करने की अपील की जाये।

४) विप्र समाज के विरुद्ध की गई निन्दनीय टिप्पणी के लिए जी. एल. अग्रवाला का घोर विरोध करते हुए आज की सभा विप्र समाज से अनुरोध करती है कि विवेकशून्य व्यक्ति की टिप्पणी को अन्यथा न लेते हुए विप्र समाज अपनी गौरवशाली परम्परा के अनुरुप क्षमाभाव धारण कर दोषी को उसकी परिणति पर छोड़ देवें। सम्मेलन समाज के सभी घटकों के बीच संयम, प्रेम, सद्भाव व एकता बनाए रखने की अपील करता है।

IISD

SREI Foundation

A Gateway to Careers

— Swami Vivekananda

Swami Vivekananda Merit Scholarship upto 100%

Quality Higher Education at lowest prices
– a corporate social responsibility

3 Yrs. **BBA** ₹ 75,000	2 Yrs. **MBA + PGPM** ₹ 85,000
3 Yrs. **BCA** ₹ 75,000	2 Yrs. **MBA (Hospital Admin.)** ₹ 95,000

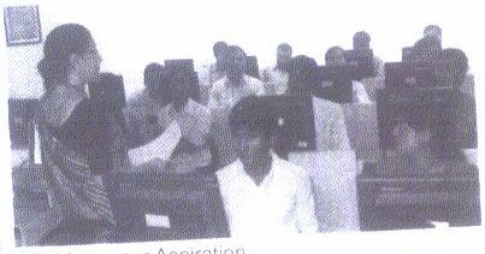

ELIGIBILITY & SELECTION

FOR MBA

FOR BBA & BCA

Assistance for placement

Eminent Faculty

Regular / Weekend Classes

AC Classrooms/Hostel

Achieve your Aspiration ...
... be a **Corporate Leader !**

Complimentary Courses with MBA, BBA, BCA :

- Spoken English
- Foreign Languages
- Soft Skills Training from HCL - CDC
- ERP Training (Microsoft Certified)
- Company Secretaryship / Chartered Accountancy / Administrative Services
- Entrepreneurship Development

Other Courses :

- Company Secretaryship
- Advocateship
- E-Tuition
- Montessori Teacher Training
- Language Courses : Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit and Hindi
- NDA · CDS · UPSC Examinations and SSB Interview
- Certificate Course in Computer Applications
- Advanced Diploma in Financial Management
- Entrepreneurship Development
- Vocational & Technical Training
- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examinations (Prelim and Main)
- WBCS (Executive) and Judicial Services Examination (Prelim and Main)
- Chartered Accountancy (CPT, IPCC & Final)
- Diploma in Banking and Finance
- Preparatory course for Entrance Examination of MD, MS, MRCP (Medicine) – Part-I and DNB – Part-I

Recognised by UGC, Ministry of HRD, Govt. of India, Approved by Joint Committee of UGC, AICTE & DEC

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

Unit - I

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata - 700 106
Ph : 2335 2378/2861, Fax : 2335 2379
E-Mail : info@iisdedu.in
Website : www.iisdedu.in

Unit - II

9, Syed Amir Ali Avenue, 5th Floor
Kolkata- 700017, Ph : 4001 9894
E-Mail : iisdunit2@gmail.com
Website : www.iisdedu.in

सम्पादकीय

राष्ट्रसंघ चार्टर दिवस (२६ जून) के अवसर पर संयुक्त राष्ट्रसंघ की गिरती साख एवं घटती भूमिका

सीताराम शर्मा

विश्व एक अभूतपूर्व एवं अप्रत्याशित परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के तेजी से बदलते माहौल एवं दौर में संयुक्त राष्ट्र संघ पिछड़ता एवं अलग-थलग पड़ता दिख रहा है। संयुक्त राष्ट्रसंघ के अस्तित्व को कोई बड़ा खतरा नहीं है। लेकिन २१वीं शताब्दी की बदलती दुनिया में इसकी भूमिका, विशेषकर विश्व शांति एवं सुरक्षा के क्षेत्र में लगातार घटती प्रतीत होती है।

वर्त्तमान शताब्दी के आने वाले ५० वर्षों की दुनिया २०वीं शताब्दी के आखिरी पांच दशकों से बिल्कुल भिन्न होगी। शीत युद्ध कालीन दो महाशक्तियों-अमेरिका एवं सोवियत रूस का युग बीत गया है। सोवियत रुस के विघटन के बाद के एक ध्रुवीय विश्व में अमेरिका ने सबसे ताकतवर राष्ट्र के रूप में विश्व-व्यवस्था पर चौधराहट की एवं राष्ट्रसंघ को दरकिनार कर ईराक पर एक तरफा हमला बोल दिया। तत्कालीन संयुक्त राष्ट्रसंघ सचिव कोफी अन्नान ने सुरक्षा परिषद की अनदेखी करने की निन्दा करते हुए अमेरिकी ईराकी युद्ध को 'गैर कानूनी' तक घोषित कर डाला। सोमालिया, रवाण्डा, दारफूर जैसी शर्मनाक घटनाओं के साथ-साथ विश्वसंस्था की अकुशलता, भ्रष्टाचार, ईराकी तैल बनाम खाद्य घोटाले ने राष्ट्रसंघ की प्रतिष्ठा को गहरा आघात पहुंचाया है। एक तरफ अमेरिका की राष्ट्रसंघ की **'अप्रभावशाली बातुनी दुकान'** के रूप में नापसन्दगी जग जाहिर है वहीं सुरक्षा परिषद के कई एवं राष्ट्रसंघ के अधिकतर सदस्य देश अमेरिका के संयुक्त राष्ट्रसंघ पर नाजायज अंकुश एवं दबाव से नाखुश रहे हैं।

शीत युद्ध में विजय के पश्चात अमेरिका की यह सोच बनी थी कि विश्व में व्यवस्था एवं न्याय स्थापित करने के लिये उन्हें सैनिक कार्यवाही तक करने का नैतिक अधिकार प्राप्त हो गया है। अमेरिका का जो विश्व का सबसे ताकतवर देश है अन्य देशों की 'सार्वभौमिक समानता' के सिद्धान्त की राजनैतिक सच्चाई को स्वीकार नहीं करता। अमेरिका अपने 'राष्ट्रीय हित' में राष्ट्रसंघ का एक तरफा उपयोग करता है लेकिन दूसरी तरफ उसके नियम-कानून से बंधना नहीं चाहता। विश्व की अन्य ताकतों-चीन, रुस, फ्रांस, ब्रिटेन आदि ने इस कटू सत्य को वर्तमान परिस्थितियों में न चाहते हुए भी स्वीकार कर लिया है। क्योंकि यह एक तथ्य है कि आज की दुनिया में अमेरिका एकमात्र शक्तिशाली देश है, जिसकी अपनी स्वतंत्र सुरक्षा नीति है, पूरी दुनिया में सैनिक पहुँच है एवं उसने वैश्विक उत्तरदायित्व अपने हाथ में ले रखा है। इस सोच के अन्तर्गत अमेरिका के लिये उसकी अपनी सार्वभौमिकता सर्वोपरी है जबकि अन्य राष्ट्रों की स्वतंत्रता एवं सार्वभौमिकता अमेरिका के लिये अधिक महत्वपूर्ण नहीं। संयुक्तराष्ट्र अमेरिका एवं संयुक्त राष्ट्रसंघ का जोड़ा बेमेल हैं। अमेरिका की मनमानी एवं एकतरफा नीति ने उसके मित्र देशों को भी असहज बना दिया है। लेकिन संयुक्त राष्ट्रसंघ के लिये अमेरिका का महत्व सबसे अधिक है। अमेरिका के सहयोग के बगैर राष्ट्रसंघ का अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है। राष्ट्रसंघ के लिये अमेरिका का महत्व कितना महत्वपूर्ण है यह कुछ वर्ष पूर्व २० देशों में एक सर्वेक्षण के दौरान ज्ञात हुआ। सर्वेक्षण की रपट के अनुसार सभी २०

देशों में राष्ट्रसंघ प्रतिष्ठा में गिरावट आयी है, अमेरिका में इसलिये क्योंकि राष्ट्रसंघ ने ईराक युद्ध में अमेरिका का साथ नहीं दिया, बाकी १९ देशों में इसलिये क्योंकि राष्ट्रसंघ ईराक पर अमेरिकी हमले को रोक नहीं सका। अमेरिका की सैनिक ताकत आज भी विश्व में सर्वोपरि है। हालांकि अमेरिका अपनी कूल घरेलू उत्पादकता का ४ से ५ प्रतिशत ही हथियारों पर खर्च करता है लेकिन यह खर्च दुनिया के सैनिक खर्च का ४० प्रतिशत है एवं इसके बाद के २० देशों के कूल खर्च से भी अधिक है। अमेरिका एकमात्र सैनिक ताकत है जो अपने विश्व-व्यापी पांच कमाण्ड के माध्यम से पूरी दुनिया पर सैनिक प्रभुत्व रखता है।

क्षेत्रीय ताकतें

पिछले एक दशक में अर्न्तराष्ट्रीय क्षीतिज पर एक तरफ नयी क्षेत्रीय ताकतें उभरी है, वहीं आर्थिक मन्दी ने अमेरिका को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। आने वाले ५० वर्षों में अमेरिका एवं नयी क्षेत्रीय ताकतपूर्ण देशों के बीच सम्बन्ध सम्पूर्ण शांतिपूर्ण, समनयित एवं पारस्परिक सह-अस्तित्व का होगा। एक ध्रुवीय व्यवस्था जिसमें अमेरिका एक मात्र ताकत है उसकी जगह बहु-ध्रुवीय विश्व व्यवस्था की ओर अर्न्तराष्ट्रीय सम्बन्ध अग्रसर होंगे। चीन एवं भारत की बढ़ती आर्थिक ताकत, जनसंख्या एवं सैनिक शक्ति के चलते एशिया से उनकी ताकत बढ़ेगी। रूस का बढ़ता कद तथा ईरान का प्रभाव अमेरिका के प्रभुत्व को चुनौती देगी। अफ्रीका में दक्षिण अफ्रिका एवं नाईजीरिया, लेटिन अमेरिका में ब्राजील नयी विश्व ताकत के रूप में उभरेंगे।

२१वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अमेरिका विश्व को नेतृत्व देने का प्रयास करते हुए नयी उभरती क्षेत्रीय ताकतों से टकराव के बजाय सहयोग की नीति को अपनायेगा। इन क्षेत्रीय ताकतवर देशों का अपने-अपने क्षेत्र में सुरक्षा एवं आर्थिक क्षेत्र में पूरा प्रभाव रहेगा। एकमात्र ताकत अमेरिका के स्थान पर विश्व के विभिन्न महाद्वीपों में उत्तर, दक्षिण, पूर्व एवं पश्चिम में नयी क्षेत्रीय महाशक्तियों का जन्म होगा जो अपने-अपने क्षेत्र में बड़ी ताकत के रूप में कार्य करते हुए एक नयी विश्व व्यवस्था को जन्म देंगी।

नयी विश्व-व्यवस्था

इस नयी विश्व व्यवस्था में संयुक्त राष्ट्रसंघ का क्या स्थान, अवदान एवं भूमिका होगी। राष्ट्रसंघ का 'सामूहिक सुरक्षा' के सिद्धान्त पर विश्व व्यवस्था की स्थापना का प्रयास असफल रहा है। राष्ट्र संघ एक महत्वपूर्ण विश्वसंस्था के रूप में कार्य करेगा। किसी भी देश के लिये उसकी सदस्यता, उसकी सार्वभौतिकता का सबसे बड़ा प्रमाण रहेगा। जो देश बड़ी ताकत नहीं बन पा रहे हैं उनके लिये राष्ट्रसंघ एक बहुत ही उपयोगी एवं महत्वपूर्ण मंच साबित होगा। लेकिन बहू-ध्रुवीय विश्व व्यवस्था में शांति एवं सुरक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रसंघ की भूमिका में लगातार एक गिरावट देखने को मिलेगी। बड़ी क्षेत्री ताकतें अपने-अपने क्षेत्र में शांति एवं सुरक्षा की जिम्मेदारी रखते हुए राष्ट्रसंघ की दखलअन्दाजी को स्वीकार नहीं करेगी। इस व्यवस्था को अमेरिका का समर्थन प्राप्त होगा, क्योंकि क्षेत्रीय ताकतें अपने क्षेत्र में प्रभाव रखते हुए अमेरिका के हितों से टकराव नहीं करेंगी। सुरक्षा परिषद में इन क्षेत्रीय ताकतों के विश्वास में कमी आयेगी। इस तरह शांति एवं सुरक्षा के क्षेत्र में राष्ट्र संघ की भूमिका आने वाले दशकों में महत्वपूर्ण नहीं रहेगी।

सुरक्षा के क्षेत्र में भूमिका में कभी के बावजूद राष्ट्रसंघ पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन, खाद्य, विकास, महामारी, शरणार्थी, मानवाधिकार आदि क्षेत्रों में जहां राष्ट्रसंघ की शानदार उपलब्धियां रही है, राष्ट्र संघ एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा। राष्ट्रसंघ में राजनीतिक एवं सांगठनिक सुधार के आसार कम है, अतः सुरक्षा परिषद के स्थायी अथवा अस्थायी सदस्यता नीति में कोई मूलभूत परिवर्तन संभव नहीं दिख रहा है। इस घटती भूमिका के बावजूद राष्ट्रसंघ का कोई विकल्प नहीं है।

□ लेखक पश्चिम बंगाल संयुक्त राष्ट्रसंघ संस्था के चेयरमेन एवं बेलारुस गणराज्य के मानद कन्सुल है।

अध्यक्षीय

"राम बचायें ऐसी महँगाई से"

– हरि प्रसाद कानोड़िया

राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह दुनिया के बड़े अर्थशास्त्री है। आश्चर्य है फिर भी देश की आर्थिक स्थिति डाँवाडोल है। चीजों के दाम आसमान छू रहे हैं। महँगाई पर सरकार काबू नहीं कर पा रही हैं। राम बचायें ऐसी महंगाई से। एक समय था जब महंगाई के लिये व्यापारियों को कोसा जाता था। अब तो पूरी तरह सरकार की नीतियां जिम्मेदार है।

डॉ. मनमोहन सिंह

रुपया तेजी से लुढ़क रहा है। सरकार असहाय सी दिख रही है। इतना ही नहीं लगता आम-आदमी की सरकार को आम-आदमी से कोई मतलब नहीं है। सभी बाजार ठण्डे है। मांग ठण्डी है। बड़ी कम्पनियों के तलपट नीचे जा रहे हैं। सरकार अपनी कुर्सी बचाने के लिये आर्थिक नीतियों एवं कार्यक्रमों से समझौता कर रही है। कोई नीति या दिशा-निर्देश साफ-साफ नहीं दिख रहा है।

सरकार कड़े फैसले और दृढ़ उपाय की बात कर रही है। यू पी ए-२ सरकार के तीन साल पूरे होने के अवसर पर प्रधानमंत्री एवं सोनिया गांधी ने कठोर उपायों का आश्वासन दिया है, लेकिन जनता एवं उद्योग दोनों ही आशंकित एवं निराश है। ढुलढुल, नकारा एवं बढ़बोली सरकार अर्थव्यवस्था को संभालने के मामले में फिसड्डी साबित हो रही है। हालांकि ७ प्रतिशत की विकास दर के लिये सरकार अपनी पीठ ठोकने से नहीं हिचकती।

कमजोर इच्छा शक्ति एवं गठबन्धन सरकार के सही प्रबन्धन के अभाव में सरकार कोई निर्णय नहीं ले पा रही है। इस बीच कुछ निर्णय विकास के विरुद्ध है। सरकार धन की कमी से लड़ रही है। कालेधन के विषय में एक श्वेत पत्र संसद में रखा गया है जो दिशाहीन है। सरकार पर **"पालिसी पैरालिसिस"** का आरोप लगा है – यानि सरकार कोई भी नीति निर्धारण करने में अक्षम एवं अयोग्य है। सरकार को मालूम है कि आर्थिक स्थिति बेहत खराब है। विदेशी निवेशक अपने घर लौट रहे हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियां डरी हुयी सी महसूस कर रही है।

सोनिया गांधी

वोट की राजनीति बदलनी होगी। सरकार कल्याणकारी कार्यक्रमों में जरुरत से ज्यादा खर्च कर रही है। सरकार यह जानती है लेकिन वह इन कार्यक्रमों को बन्द कर ग्रामीण मतदाताओं को नाराज नहीं कर सकती। सभी जानते है नरेगा ने ही २००५ का चुनाव जीतने में बड़ी भूमिका निभायी थी। सरकार को दुबारा सत्ता में आना है और इन समूहों के हाथ में वोट है। अजीब स्थिति है जनता सुशासन एवं आर्थिक विकास तथा अपने जीवन-स्तर में सुधार के लिये वोट नहीं देती, बल्कि आर्थिक सुविधाओं एवं सबसिडी के लिये वोट देती है। स्थिरता के नाम पर सरकार चुप बैठी है। रीढ़ विहीन स्थिरता से अच्छी तो अस्थिरता है, कभी कभी तो यह लगता है।

बहुत जरूरी है जीने के लिए अनुशासन

– **सन्तोष सराफ**, राष्ट्रीय महामंत्री

समाज हो या परिवार, गांव हो या देश कहीं भी रहने के, जीने के तौर – तरीके होते हैं। नियम-कानून होते हैं। दरअसल बिना नियम-कानून और तौर – तरीकों से स्थिति बिगड़ती है। अनुशासन भंग होता है। अनुशासन बनाए रखने के लिए नियम मानकर चलना ही पड़ता है। छोटा परिवार हो या बड़ा, किसी को मुखिया बनना पड़ता है और परिवार के अन्य सदस्यों को मुखिया की बात माननी पड़ती है। दरअसल यही परम्परा चली आ रही है। अगर कुछ नियम-कानून और अनुशासन नहीं होता, तो शायद पारिवारिक और सामाजिक अवधारणा का जन्म ही नहीं हुआ होता। आजकल सभी अपने में मस्त हैं। तमाम तरह की परेशानियों से त्रस्त हैं, पस्त है, फिर भी न जाने क्यों मस्त हैं? नियम-कानून और अनुशासन का पाठ सबसे पहले परिवार में ही पढ़ने को मिलता है। अगर बचपन में बच्चों को अनुशासन का पाठ पढ़ाया जाए, परिवार में, समाज में जीने का तरीका सिखाया जाए, तो शायद आज के समाज की जो स्थिति है, उससे रू-ब-रू नहीं होना पड़ता। यहां सामाजिक बंधनों में बंधने की बात नहीं हो रही और न ही किसी तरह की पाबंदियों को थोपने का तात्पर्य है। सवाल यह है कि क्या बिना अनुशासन के मनुष्य अपने आपको सामाजिक प्राणी कहला सकता है? अफसोस की बात है कि समाज के लोग, समाज के वरिष्ठ और अनुभवी लोग जब कभी परम्पराओं की बात करते हैं, संस्कृति और संस्कार की बात करते हैं, तो समाज का एक वर्ग ऐसे लोगों को पुराने ख्यालों वाला बताकर मुंह मोड़ लेता है, लेकिन अब वक्त आ गया है, जबकि हमें न्यूनतम स्तर पर अनुशासन के दायरे में जीना सिखना होगा।

मनीषियों ने कहा है–कहीं भी अति नहीं होना चाहिए। अगर किसी भी क्षेत्र में अति होती है, तो फिर स्थिति निश्चित रूप से बिगड़ेगी। आज के समाज में अनुशासन भंग करने तथा परम्पराओं, संस्कृति-संस्कारों, से मुंह मोड़ने की अति हो रही है, जिस पर रोक लगनी चाहिए।

समाज मेरा क्या कर लेगा? मेरा समाज से क्या सरोकार है? समाज और सामाजिक चेतना की मैं परवाह नहीं करता। सामाजिक नियमों की ऐसी की तैसी! भूखे पेट था तब समाज और सामाजिक नियमों से तो पेट नहीं भर गया। आज मोटरगाड़ी है, मकान है, व्यवसाय है, खून – पसीना की कमाई है तब आप समाज का भय दिखाते हैं? हम इन्हें नहीं मानते। समाज बहरा होता जा रहा है। समाज नंगा होता जा रहा है। समाज अंधा होता जा रहा है। सामाजिक नियमों की खुलेआम अवहेलना हो रही है, सामाजिक कायदे कानूनों को भुला दिया जा रहा है। लक्ष्मण रेखाओं का खुले आम उल्लंघन हो रहा है। सभी अपनी सुविधानुसार बनाए गए नियमों को ही सामाजिक नियम कानून की संज्ञा देने लगे हैं। अपने बहशियाना मनोवृत्तियों को खुले आम प्रदर्शित किया जा रहा है। निःसकोच गलत-सलत बातों को, इच्छाओं को दिखाया जा रहा है और इसे ही सामाजिक नियम कानून घोषित कर दिया गया है। पुरानी पीढ़ी की बातों को, नियम कानून को, सीमाओं को, 'आउट ऑफ डेट' करार दिया गया है। उन पोंगापंथियों की कौन चर्चा करे, कौन उनकी बातों को दुहराए। सभी तो आज हवा के प्रतिकूल हैं। अटकावे में कौन आए। किसे बन्दिश पसन्द है। कौन खुली हवा के बदले बंद कमरे की घुटी हवा में रहना चाहेगा? सभी तरफ तो खुले वातावरण, खुले रहने की चर्चाएं हैं। खुलापन तो आज की हवा है। पुरानी बातें, पुराने कायदे तो महाभारत काल के लिए थे जब पिता को 'पिताश्री' और माता को 'माताश्री' कहा जाता था। मम्मी-डैडी, हाय-मिल और हाय फिल के जमाने में पुराने नियम-कानून कैसे और किसके गले से उतरे? सभी तो चोंगा उतार फेंकने को व्याकुल हैं। सभी दौड़ में आगे-आगे रहना चाहते हैं। किसे सोचने की फुरसत हैं? किसे समझने की चिन्ता है?

समाज को तोड़ना-मरोड़ना अपने हिसाब से, अपनी सुविधा से कौन नहीं कर रहा है। सभी दुधारू गाय को दुहना जानते हैं पर 'चारा' कौन खिलाए? सभी मतलब के पुजारी हैं सभी एकतरफा मतलब की राह में हैं। समाज सुस्त रहेगा तो हम सुस्त रहेंगे, इतनी चिन्ता किसे है। अपने को दुरुस्त रखना है समाज जाए भाड़ में। अपने को नियम कानून उन हदों तक ही मानना है जहां तक अपना मतलब निकल जाए। एक कदम भी आगे नहीं, पीछे नहीं। आखिर समाज अपने से ही तो बनता है फिर अपनी ही चिन्ता करें। दूसरे की दूसरे करेंगे। सभी कुछ देख-सुनकर, आंखों पर पट्टी बांध कर चुपचाप बैठने में कहां तक भलाई है। कहां तक नियमों के उल्लंघन बर्दाश्त किए जा सकते हैं। खुली हवा, धोखे के पर्दे के पीछे कब तक उनका गुणगान चलेगा। 'लक्ष्मण रेखाओं' को तोड़ने की कब तक वारदात होंगी। समाज की छाती पर खुले आम मूंग दलने की घटनाओं को कब तक, किस हद तक बर्दाश्त किया जा सकेगा? अपने स्वार्थ पर बने नियम-कानूनों, वाजिब-गौरवाजिब हरकतों को कब तक और क्यों बर्दाश्त किया जाएगा। नंगा-नाच, वहशियाना हरकतों, रिश्तों और नातों की खुली अवहेलना, सीमा कहां है? क्यों सहा जाए?

FREE SCHOLARSHIP

MARWARI SAMMELAN FOUNDATION

(A Trust of All India Marwari Federation)

Invites application from the meritorious and needy students of the society for scholarships to pursue Post Graduate Higher Education in the fields of Engineering, Technical, Civil Services, Medicine, Management etc.

Eligibility : (A) Meritorius student with excellent academic record between the age of 17-25 years and having secured admission in a recognized educational institution purely on the basis of merit. (B) Annual income of the perents of the candidate should preferably be less than Rs. Two and a Half Lakhs.

Procedure: (A) Application with details of past academic records, proof of admission, parent's income/ along with passport size photograph may be submitted duly recommended by any branch of Marwari Sammelan/ Associated Organisations. (B) The Scholarship payable per student per year will be a maximum of Rs. Two Lakhs only. (C) One or two scholarships per academic year is reserved for girl students. (D) The assistance may be in the form of Grant/ Scholarship/ Interest Free Loan. (E) Eligible students may be invited for interview.

Please apply to :
Chairman,
Higher Education Committee,
All India Marwari Sammelan,
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Phone & Fax : (033) 22680319
e-mail: aimf1935@gmail.com

मिलनी के रूप में पुष्प गुच्छ देकर करें सम्मान

– **रामअवतार पोद्दार**, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

यह प्रसन्नता की बात है कि समाज का आर्थिक व शैक्षणिक स्तर पर काफी विस्तार हुआ है एवं उसी की तुलना में सामाजिक संस्थाओं का भी वर्चस्व बढ़ा है। लेकिन चिंता की बात यह है कि समाज में सम्पन्नता बढ़ने के साथ-साथ कुरीतियों को भी बढ़ावा मिला है जिसका मुख्य कारण समाज में सम्पन्न वर्ग का अपनी सम्पन्नता का प्रदर्शन करना है। एक तरफ जिस गति से सम्पन्नता बढ़ी है वहीं दूसरी तरफ गरीबी भी बढ़ी है लेकिन प्रदर्शन सभी वर्गों में देखा-देखी बढ़ता जा रहा है।

समाज का कुरीतियों में वैवाहिक कार्यक्रम में एक प्रचलन मिलनी का है यह कब से प्रचलन में आया या क्यों आया यह तो कहना मुश्किल है परन्तु मेरे विचार से लड़की वालों की तरफ से लड़के वाले के बुजुर्ग का सम्मान करने के लिये यह प्रथा शुरू हुई होगी। परन्तु आज उसका स्वरूप बदल कर बहुत की कुत्सित हो गया है या कर दिया गया है। प्रचलित मुद्रा के बदले चाँदी की मुद्रा ने इसका स्थान ले लिया है।

मिलनी सम्मान का प्रतीक है अतः मेरा यहाँ पर एक सुझाव है कि क्यों नहीं लड़की वालों की तरफ से साहजी (लड़के वालों को) रुपयों से तोलने के बजाय मिलनी के रूप में एक गुलाब का पुष्प अथवा पुष्पगुच्छ देकर साहजी का सम्मान किया जाए और उनसे गले मिला जाये। बदले में साहजी (लड़के वाले) भी अपने साहजी को एक गुलाब का पुष्प देकर सम्मानित करे।

हरियाणा के रहने वाले राजस्थानी समाज में मिलनी का स्वरूप दूसरा है। उनके यहाँ मिलनी समारोह में लड़के वाले की तरफ से उपस्थित सभी अतिथियों को, परिवार के सभी सदस्यों को, दोस्तों को, बच्चों को और परिवार के सदस्य उपस्थित नहीं होने पर भी मिलनी देनी पड़ती है, जो कि कहीं-कहीं पर सैंकड़ों की तादाद में होती है।

इसके अलावा महिलाओं की मिलनी भी विवाह समारोह में होती है। इसका स्वरूप पुरुषों की मिलनी से अलग है, वह हजारों रुपयों में होती है।

कुछ वर्षों पहले सम्मेलन ने एक वैवाहिक आचार-संहिता बनाई। जिसमें मिलनी सबकी कागज का चार रुपया किया गया। सम्मेलन के कई सदस्यों का विभिन्न प्रांतों से सुझाव भी आये। जैसे कागज के रुपये उपलब्ध नहीं होते हैं, प्रचलित चार रुपये की कीमत कुछ भी नहीं है आदि।

जैसा कि मैंने पहले लिखा है कि मिलनी सम्मान का प्रतीक है अतः मेरा यहाँ पर एक सुझाव है कि क्यों नहीं लड़की वालों की तरफ से साहजी (लड़के वालों को) रुपयों से तोलने के बजाय मिलनी के रूप में एक गुलाब का पुष्प अथवा पुष्पगुच्छ देकर साहजी का सम्मान किया जाए और उनसे गले मिला जाये। बदले में साहजी (लड़के वाले) भी अपने साहजी को एक गुलाब का पुष्प देकर सम्मानित करे।

यहाँ पर मैंने सिर्फ मिलनी का प्रश्न उठाया है। वैसे समाज में अनेक नई कुरीतियाँ आ गई है और दिन प्रति दिन बढ़ रही है। वैभवता के कारण दिखावे का प्रदर्शन करना इसका मुख्य कारण है। दिखावा, कीमती आमंत्रण कार्ड, चार घंटे के लिये पंडाल एवं उसकी सजावट पर अनावश्यक खर्च करना, स्वरूचि भोज में ६०-७० प्रकार के व्यंजन आदि। वैवाहिक समारोह में कॉकटेल पार्टी का प्रचलन भी बढ़ रहा है जो कि आने वाले समय में समाज की संस्कृति ही बदल डालेगा।

मेरा समाज के प्रबुद्ध लोगों से निवेदन है कि वे आगे आयें और सब मिलकर समाज की इन कुप्रथाओं पर पाबन्दी लगायें जैसे कि हमारे समाज में पूर्वजों ने बैण्ड बाजे पर लगाया था। जिसके कारण आज भी कलकत्ते में बैण्ड नहीं बजते हैं। समाज के प्रबुद्ध लोगों द्वारा वैवाहिक कार्यक्रमों में सुधार के लिये बनाये गये नियमों का पालन नहीं करने वालों के खिलाफ कठोर कदम उठाये जायें जिससे कि वे सुधार रूपी कदम उठाने के लिए वाध्य हों। जरूरत पड़ने पर उस विवाह समारोह का समाज द्वारा सामाजिक रूप से बहिष्कार किया जाए, चाहे वह समारोह कितने ही बड़े प्रभावशाली व्यक्ति के यहाँ क्यों न हो।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

पदाधिकारी (2011-12)

अध्यक्ष
श्री हरिप्रसाद कानोड़िया
फोन : ०९८३०० ४७९७७
harikanoria@bharatconnet.com

उपाध्यक्ष

श्री रामअवतार पोद्दार
फोन : ०९८३०० १९२८१
rap@wondergroup.in

श्री रामपाल अग्रवाल 'नूतन'
फोन : ०९३३४१ १६३३४
rampalnutanagarwal@gmail.com

श्री ओम प्रकाश खण्डेलवाल
फोन : ०९४३५० ४५४२५
khandelwalomprakash@yahoo.com

श्री रमेशचन्द गोपीकिशन बंग
फोन : ०९४२३१ ०१७००

श्री संतोष अग्रवाल
फोन : ०९३२९१ ००९६३
globalindia@hotmail.com

श्री रामकुमार गोयल
फोन : ०९८८५२ ८४८४८
cmd@arclimited.com

महामंत्री
श्री संतोष सराफ
फोन : ०९८३०० २१३१९
roadcargo@vsnl.net

संयुक्त मंत्री
श्री संजय हरलालका
फोन : ०९८३०० ८३३१९
०९८०४१ ५४११५
sevasansar@gmail.com

संयुक्त मंत्री
श्री कैलाशपति तोदी
फोन : ०९८३०० ४४०७९
kptodi@rediffmail.com

कोषाध्यक्ष
श्री आत्माराम सोंथलिया
फोन : ०९८३१० २६६५२
०९४३३० २८८०८
jbccsonthalia@yahoo.com

WONDER GROUP
wonder images
one city. one machine. one colour.
Wonder Images
PVT. LTD.
Wonder Images is an ISO 9001 : 2008 certified company with focus on printing for indoor and outdoor advertising across flex, P/E and PVC mediums with printing capacity of 100,000 sq.ft per day.
We have Five state of the art printing machines.(HP UV 2300, HP XLJET 1500, VUTEK 3360, HP LATEX L 65500 & HP Designjet 5500 PS)
Indoor & Outdoor SOLUTIONS
Front-lit-flex
Back-lit-flex
Woven P/E
Self Adhesive vinyl
Building wrap
One way vision
Vehicle / fleet graphics
Floor and wall graphics
Reflective Signage
Frosted vinyl
Canvas
Translite
Photo realistic poster paper
Mesh, Tyvek,Yupo
Only 1 in eastern India to expertise in printing on woven P/E
Hundreds of colours & media for Indoors
5 State-of-the-art printing machines
Eastern India's Largest Outdoor Printers.
Contact Us:
Amit: 09830425990
Email: amit@wondergroup.in
Works:
Tangra Industrial Estate- II
(Bengal Pottery Compound)
45, Radhanath Chowdhury Road. Kolkata – 700 015
Tel: 033- 2329 8891-92
Fax: 033- 2329 8893

एक नाम, एक संविधान एवं एकल सदस्यता सम्बन्धित ऐतिहासिक निर्णय

एकल सदस्यता सितम्बर माह से लागू

राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारियों का सम्मेलन

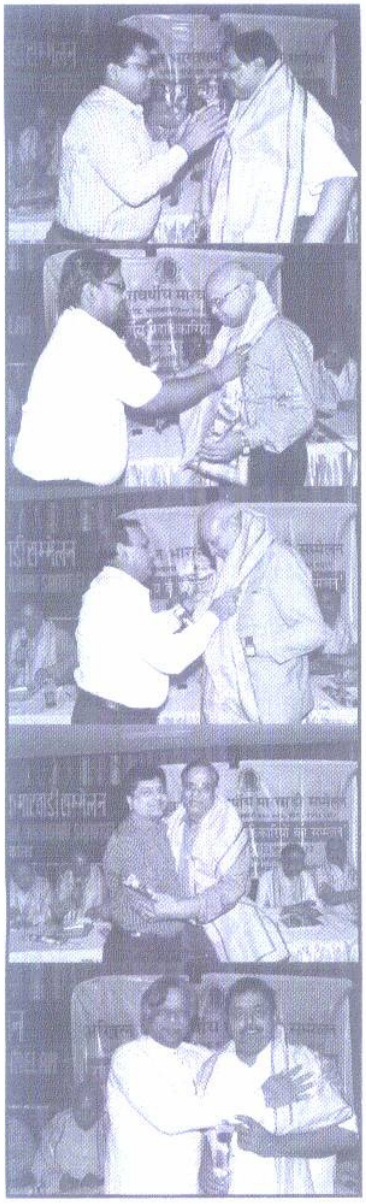

२१-२२ जुलाई २०१२, होटल हवेली, कोलकाता।
(आतिथ्य : पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा)

सम्मेलन के राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारियों की एक दो दिवसीय संयुक्त बैठक पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में होटल हवेली, कोलकाता में सम्पन्न हुई। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से सम्मेलन की गतिविधियों को और व्यापक रूप देने के लिए कोलकाता में विभिन्न प्रान्तों से आये पदाधिकारियों की दो दिवसीय बैठक की अध्यक्षता करते हुए सम्मेलन सभापति श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने कहा कि सम्मेलन को और अधिक व्यापक बनाने के लिए हमें मिलकर काम करना होगा। इस अवसर पर सभी प्रान्तों के पदाधिकारियों ने उनकी बातों में सहमति प्रदान करते हुए सम्मेलन के एक नाम एक संविधान व एकल सदस्यता पर सहमति प्रदान की। झारखण्ड एवं उड़िसा प्रान्त के विशेष अनुरोध पर एकल सदस्यता ३० सितम्बर से प्रभावी माना जाएगा। इस अवसर पर एक सौ रुपये की नई सदस्यता भी शुरु की गई है जिसे भी समाज विकास पत्रिका प्रति माह भेजने का निर्णय लिया गया है।

२१.७.२०१२ को प्रातः १० बजे सम्मेलन के सभापति श्री हरिप्रसाद कानोड़िया के अध्यक्षता में दीप प्रज्वलन के साथ उद्घाटन समारोह प्रारम्भ हुआ। मंच पर आसीन अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, निवर्तमान अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूंगटा, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ,

एक सौ रुपये की नई सदस्यता भी शुरु की गई है जिसे भी समाज विकास पत्रिका प्रति माह भेजने का निर्णय लिया गया।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रमेश चंद गोपी किशन बंग, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामपाल अग्रवाल 'नूतन', कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथालिया, पश्चिम बंग प्रादेशिक अध्यक्ष श्री विजय कुमार गुजरवासिया का पुष्पगुछ एवं उत्तरीय द्वारा पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के सदस्यों ने अभिनन्दन किया।

बाहर से पधारे हुए बिहार प्रांतीय अध्यक्ष श्री विजय किशोरपुरिया, झारखंड प्रांतीय अध्यक्ष श्री विनय सरावगी, उत्कल प्रांतीय अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र लाठ, महाराष्ट्र प्रांतीय अध्यक्ष डा. जयप्रकाश शंकरलाल मुंदड़ा, पूर्वोत्तर प्रादेशिक अध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल, दिल्ली प्रादेशिक अध्यक्ष श्री पवन कुमार गोयनका, बिहार प्रांतीय महामंत्री श्री राजेश बजाज, बिहार प्रांतीय संगठन मंत्री, श्री कमल नोपानी, बिहार के प्रतिनिधि श्री महेश जालान, बिहार से महिला प्रतिनिधि श्रीमती सुषमा अग्रवाल, झारखंड के प्रतिनिधि श्री बसंत मित्तल एवं श्री रविशंकर शर्मा, उत्कल प्रादेशिक महामंत्री श्री विजय केडिया, उत्कल प्रतिनिधि श्री अशोक जालान, मध्यप्रदेश प्रादेशिक महामंत्री श्री कमलेश कुमार नाहटा एवं प्रतिनिधि श्री प्रभात अग्रवाल, महाराष्ट्र के प्रादेशिक महामंत्री श्री कमलेश कुमार नाहटा एवं प्रतिनिधि श्री प्रभात अग्रवाल, महाराष्ट्र के प्रादेशिक महामंत्री श्री नेमिचंद पोद्दार, पूर्वोत्तर प्रांतीय प्रतिनिधि श्री मधूसुदन सिकरीया, छत्तीसगढ़ प्रादेशिक महामंत्री श्री घनश्याम पोद्दार, पश्चिम बंग प्रादेशिक महामंत्री श्री विजय डोकानिया, जगदीश पाटोदिया, श्री शम्भु चौधरी, श्री राम गोपाल बागला, हवेली के निर्देशक श्री सूर्यप्रकाश बागला, महाराष्ट्र के प्रतिनिधि श्री विरेन्द्र धोका व अन्य पदाधिकारियों का स्वागत किया गया।

विभिन्न राज्यों के मौजूदा सभी सदस्यों की अलग-अलग वर्तमान सूची ३०.९.२०१२ तक राष्ट्रीय कार्यालय में भेजनी होगी।

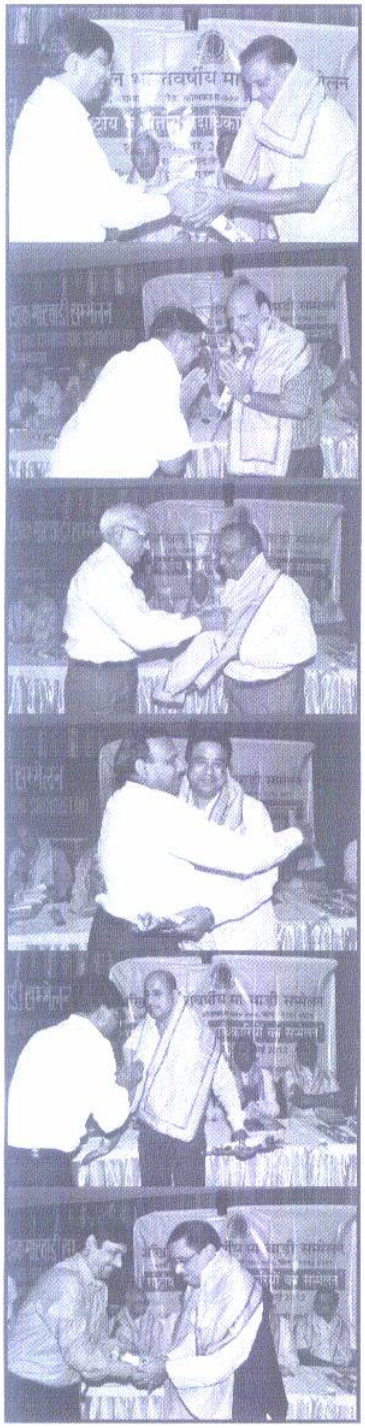

राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष सराफ ने संचालन करते हुए कहा कि एक नाम, एक संविधान एवं एकल सदस्यता का एजेन्डा तीन वर्ष से लम्बित है। आज इस पर विचार विमर्श करके हमें निष्कर्ष पर पहुंचना है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने अपने वक्तव्य में कहा कि सम्मेलन का कार्य आगे बढ़ रहा है लेकिन इसे सबको मिलकर और आगे बढ़ाना है। श्री रामअवतार पोद्दार के प्रयास से उत्तराखंड में शाखा बनी। एकल सदस्यता होने से सामंजस्य एवं समरसता बढ़ेगी। वैवाहिक दिखावा और आडम्बर नहीं होना चाहिए। सादगी, संस्कार, शिक्षा, महिलाओं एवं युवकों की भागीदारी बढ़नी चाहिये। धार्मिक आडम्बर एवं मद्यपान से परहेज हो ऐसा प्रयास हम सबको मिलकर करना चाहिए। उच्च शिक्षा कोष में सवा दो करोड़ संचित है। समाज के जरूरतमंद उच्च शिक्षा अभिलाषी छात्रों को आर्थिक सहयोग देने के लिए सम्मेलन तैयार है।

पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने प्रांतों से आए हुए महानुभावों का हार्दिक स्वागत करते हुए कहा कि सम्मेलन तो वास्तव में प्रांतों, जिलों में, शाखाओं में बसता है। प्रांत सक्रिय रहेंगे तभी सम्मेलन सक्रिय रह सकेगा। सबसे बड़ा प्रश्न सम्मेलन की प्रासंगिकता को बचा कर रखना है। समयानुसार चलकर युवावर्ग को सम्मेलन की ओर आकर्षित करना चाहिए। समाज सुधार की जरूरत कभी बन्द नहीं होगी। पर्दाप्रथा बंद हुई लेकिन नये प्रश्न – तलाक के, शराब के, आडम्बर के उठ खड़े हुए हैं, यह चिन्ता का विषय है। उच्चत्तर शिक्षा कोष से अनुदान के लिए आवेदन नहीं आ रहे हैं। राजनीतिक चेतना एवं भागीदारी की अत्यन्त आवश्यकता है। मतदान तो हर हालत में सभी को करना चाहिए।

निवर्तमान अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुंगटा ने बताया कि दिसम्बर २००८ में दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन में पारित प्रस्ताव अविलम्ब लागू होना

वर्तमान प्रांतीय सदस्य अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सदस्य एवं राष्ट्रीय सदस्य, सम्बन्धित प्रांत के सदस्य माने जाएगें।

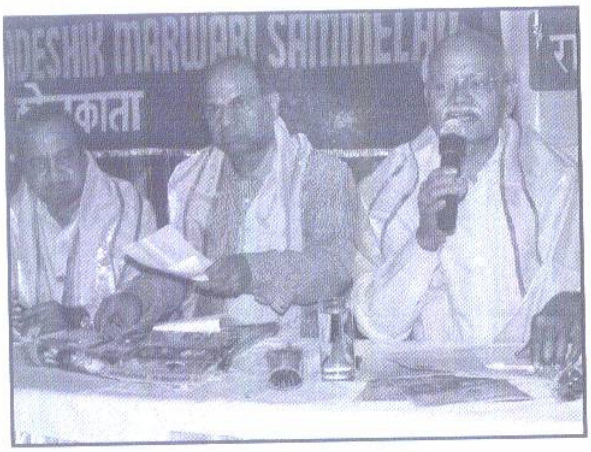

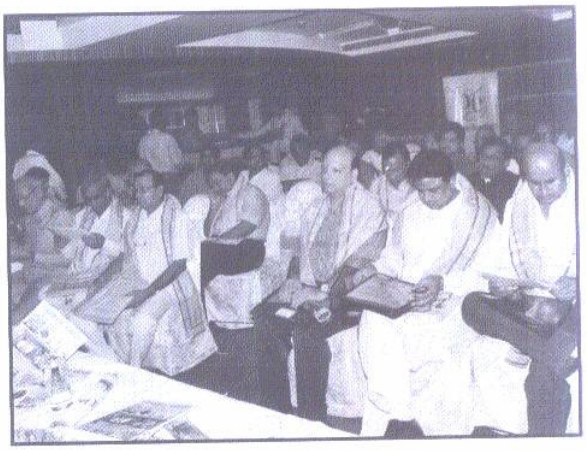

चाहिए। अभी सिर्फ १३ प्रांतों में शाखाएं है बाकि प्रांतों में भी शाखाएं खुलनी चाहिए। एकल सदस्यता कैसे प्रभावी हो इस पर विचार करना है। **कौस्तुभ जयन्ती** के अवसर पर महामहिम राष्ट्रपति प्रतिभा पाटील जी आई तब यह तय हुआ कि अर्थ के अभाव में कोई शिक्षा से वंचित नही रह जाए। उच्च शिक्षा के लिए इसी वास्ते शिक्षा कोष बनाया गया।

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विजय कुमार गुजरवासिया ने बाहर से आए हुए पदाधिकारियों द्वारा आतिथ्य ग्रहण करने हेतु आभार प्रकट करते हुए सबको धन्यवाद ज्ञापन किया।

बैठक प्रथम सत्र शुभारंभ तारीख २१.७.२०१२ दिन के ११.३० बजे। सभा का संचालन श्री संतोष सराफ ने किया।

बैठक का प्रथम सत्र श्री सीताराम शर्मा की अध्यक्षता में आरम्भ हुआ। उन्होंने बताया कि एकल सदस्यता कैसे लागू हो इसपर विचार करना है।

निवर्तमान अध्यक्ष **श्री नन्दलाल रुंगटा** ने बताया कि भविष्य में मेम्बर कैसे बनेंगे, शुल्क का वितरण किस प्रकार होगा, नामकरण में एकता लानी है, संविधान एक रूप होना चाहिए इन विषयों पर निर्णय लेना है। अभी १३ प्रांत सक्रिय है जिनमें ९ प्रांतों के प्रतिनिधि आए हैं बाकि ४ प्रांतों के पदाधिकारियों ने संदेश भिजवाया है कि जो भी निर्णय लिए जाएगें वे उन्हें मंजूर होगें।

पूर्वोतर प्रान्तीय अध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल ने बताया कि अभी हमारे यहां अलग-अलग ३ स्तर पर सदस्यता दी जाती है।

महाराष्ट्र प्रांतीय महासचिव श्री नेमीचंद पोद्दार ने कहा कि हमें बैंक अकाउन्ट खोलने में दिक्कत आ रही है एक सदस्यता का मतलब समझाएं एवं इसे लागू करें।

महाराष्ट्र के अध्यक्ष श्री जयप्रकाश शंकरलाल मुंधड़ा ने कहा कि पहले शाखा बनाएं फिर सदस्यों की गिनती करें। रेकार्ड रखने के लिए चेन सिस्टम होना चाहिए।

श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि प्रचारक जाते हैं तब यह प्रश्न उठता है कि हम प्रांत के सदस्य बनेंगे अथवा अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सदस्य बनेंगे। इसलिए एकल सदस्यता सिर्फ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ही रहेगी। श्री संतोष सराफ के प्रयास से Trade Mark में नाम पंजीकृत हो चुका है। एकरूपता लाने के लिए दो सुझावों पर विचार किया गया है। यथा–

१) ..... **प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन**
(सम्बद्ध अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन)

२) **अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन**
(..... प्रांतीय शाखा)

प्रथम सुझाव को सभी स्तर पर तत्काल लागू करना है एवं आगामी १ वर्ष में द्वितीय सुझाव को लागू करना है।

राष्ट्रीय कार्यालय द्वारा जारी सदस्यता फार्म पर निर्धारित शुल्क भरकर ही सदस्यता लेनी होगी।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का संविधान ही सभी प्रान्तीय सम्मेलनों का संविधान रहेगा। प्रत्येक प्रांत को अपनी आवश्यता के अनुसार नियम तथा उपनियम बनाने का अधिकार रहेगा। किन्तु राष्ट्रीय संविधान की भावनाओं के विपरित कोई धारा नहीं होनी चाहिए।

सम्मेलन के दूरगामी हित को देखते हुए एकल सदस्यता लागू की जा रही है। इस नियम के लागू होते ही प्रांतीय शाखाओं के सभी सदस्य अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सदस्य माने जाएंगे। राष्ट्रीय कार्यालय द्वारा जारी सदस्यता फार्म पर निर्धारित शुल्क भरकर ही सदस्यता लेनी होगी।

विभिन्न राज्यों के मौजूदा सभी सदस्यों की अलग-अलग वर्तमान सूची ३०.९.२०१२ तक राष्ट्रीय कार्यालय में भेजनी होगी। नए सदस्यों की सदस्यता शुल्क अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पक्ष में डिमाण्ड ड्राफ्ट द्वारा भेजना होगा।

झारखंड के प्रादेशिक अध्यक्ष **श्री विनय सरावगी** ने नाम परिवर्तन के लिए १ वर्ष की जगह २ वर्ष का समय रखने को कहा।

महाराष्ट्र प्रादेशिक महामंत्री **श्री नेमिचंद पोद्दार** ने कहा कि एक संविधान का स्वरूप एक वर्ष के भीतर ही लागू हो जाना चाहिये। उत्कल प्रादेशिक अध्यक्ष **श्री सुरेन्द्र लाठ** ने बताया कि हमने अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन से सहमति लेकर ही संविधान बनाया है इसलिए सिर्फ नियम बदले जा सकेंगे।

श्री नन्दलाल सिंघानिया ने कहा कि संविधान सबके लिए एक होना चाहिये। इसमें सुधार हो सकते हैं।

उत्कल प्रादेशिक महामंत्री **श्री विजय केडिया** ने कहा कि संविधान में एकरूपता लाने के लिए एक नियमावली बननी चाहिए।

श्री नन्दलाल रूंगटा ने कहा कि केन्द्रिय कार्यालय से एक प्रारूप बनाकर भेजा जाए किन्तु एक साल के भीतर ही उसमें सुधार कर सभी प्रान्तों में हो जाना चाहिए।

मध्यप्रदेश के प्रांतीय अध्यक्ष **श्री कमलेश कुमार नाहटा** ने सुझाव दिया कि सभी प्रांतों के संविधान मंगा कर मंथन कर के एक संविधान बनाना चाहिए।

छत्तीसगढ़ प्रादेशिक सचिव **श्री घनश्याम पोद्दार** ने बताया कि सदस्यता सूची हम भेज चुकें है।

बिहार प्रादेशिक सचिव **श्री राजेश बजाज** ने बताया कि १५ अगस्त तक हमने सदस्यता अभियान चला रखा है।

झारखण्ड प्रादेशिक **अध्यक्ष श्री विनय सरावगी** ने बताया कि हम १३०० सदस्यों की लिस्ट लाएं हैं। श्री नन्दलाल रूंगटा ने सूझाव दिया कि जिन प्रान्तों में सदस्यता अभियान नहीं चल रही है वैसे प्रान्त १५ जुलाई तक बने हुए सदस्यों की सूची शीघ्र भेज देवें एवं इसके बाद ३० सितम्बर के बाद एकल सदस्य ही बनाए जाने चाहिए।

बैठक का द्वितीय सत्र शुभारंभ दोपहर २ बजे (२१.७.२०१२)।

पूर्व अध्यक्ष **श्री सीताराम शर्मा** ने संबोधित करते हुए कहा कि यह निर्णय हो चुका है कि प्रांत के सदस्य अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सदस्य एवं राष्ट्रीय सदस्य, प्रांत के सदस्य बन जाएगें।

उत्कल प्रादेशिक सचिव **श्री विजय केडिया** ने बताया कि सभी का वार्षिक सत्र १ अप्रेल से होना चाहिये। हमलोग एक पत्रिका **'झलक'** निकालते हैं जिसका विशेषांक दो बार निकलता है।

महाराष्ट्र के प्रतिनिधि **विरेन्द्र धोका** ने कहा कि एक शाखा में कम से कम २५ सदस्य होने चाहिये।

मध्यप्रदेश प्रादेशिक सचिव **श्री कमलेश नाहटा** ने पूछा कार्यकाल कब से माना जाएगा। हमारे विचार से सदस्यता शुल्क कम होना चाहिये।

बिहार प्रादेशिक अध्यक्ष **श्री विजय किशोरपुरिया** ने पूछा कि वंशानुगत सदस्य, संरक्षक माने जाएंगे या मुख्य संरक्षक माने जाऐंगे। उनका कहना था कि ग्रास रूट पर १०० रुपया शुल्क २ वर्ष के लिए होना चाहियें।

महाराष्ट्र सचिव **श्री नेमीचंद पोद्दार** का सुझाव था कि सदस्यता शुल्क कम से कम १५००/- रुपये होना चाहिये। संरक्षक का ११०००/- होना चाहिये। **श्री शंभु चौधरी** ने कहा कि ४ तरह की सदस्यता रहनी चाहिये बिहार प्रादेशिक अध्यक्ष श्री **विजय किशोरपुरिया** का कहना था कि ग्रास रूट पर शुल्क कम रखें। Fund Raising होना चाहिये। सदस्यता शुल्क विशिष्ट (५०० रु) आजीवन (२१०० रु.) संरक्षक (५१०० रु.) विशिष्ट संरक्षक (५१००० रु.) होना चाहिये।

उड़िसा प्रादेशिक अध्यक्ष **श्री सुरेन्द्र लाठ** ने कहा अभी हम १०० रु. साधारण सदस्यता शुल्क लेतें हैं। शहरों में १० शाखा है और गांवों में ४० शाखा है। १०० रुपये शुल्क रखने पर हम दस हजार तक सदस्य बना सकते हैं। ११०० रु. में आजीवन सदस्य बना रहे हैं। ५१०० रु. रखने पर आजीवन सदस्य कम बनेंगे। झलक पत्रिका विज्ञापन से चलती है। हमारा चालीस हजार रुपया मासिक खर्चा है। जनगणना में सदस्य संख्या भी काम में आती है।

पूर्वोत्तर के प्रतिनिधि **श्री मधुसुदन सिकरिया** का विचार था कि सदस्यता शुल्क कम से कम रखे तथा कम शुल्क वालों को समाज विकास अथवा किसी भी प्रकार का नोटिस नहीं भेंजे।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री रमेश बंग** ने कहा कि मारवाड़ी समाज की जनगणना होनी चाहिये। एक मुख्य सदस्य २५० रुपये का परिवार के बाकी लोगों को १० रुपये सदस्य बनाया जाना चाहिये। शुल्क २५०/-, २१००/-, २१०००/-, १००००/- रखें। **श्रीमती सुषमा अग्रवाल** का कहना था कि पहले सदस्यों को जोड़ना चाहिए।

झारखण्ड प्रादेशिक **श्री विनय सरावगी** ने कहा कि सम्मेलन ८ करोड़ मारवाड़ियों की संस्था है इसलिये साधारण लोगों को इसमें अधिक से अधिक जोड़ना चाहिये। साधारण शुल्क १००/- और आजीवन शुल्क २१००/- से अधिक नही होना चाहिये।

श्री महेश जालान का कहना था कि शाखा सदस्य का शुल्क ५०/- होना चाहिये।

राष्ट्रीय संयुक्त सचिव श्री संजय हरलालका ने बताया कि किसी भी शाखा ने अभी तक दस हजर सदस्य नही बनायें हैं। श्री नन्दलाल रूंगटा का कहना था कि व्यक्तिगत प्रभाव से ही सदस्य बनते हैं। समाज विकास छोड़कर केन्द्र का सालाना खर्चा १० लाख रुपया है। शुल्क २००/-, ५००/-, ५१००/-, ५१०००/- रुपया होना चाहिये।

श्री सूर्यप्रकाश बागला ने विचार प्रकट किया कि समाज विकास को व्यावसायिक दृष्टिकोण से बढ़ाया जा सकता है। विज्ञापन और इन्टरनेट को माध्यम बनाया जाना चाहिये। साधारण सदस्यता शुल्क १००/- रु. से अधिक नही रखना चाहिये।

झारखण्ड प्रादेशिक प्रतिनिधि **श्री बसन्त मित्तल** का विचार था कि समाज विकास के लिए सदस्यता शुल्क वृद्धि नहीं होनी चाहिये। अग्रवाल समाज ११००/- रुपये में पति पत्नी दोनों को सदस्यता देता है। **श्री सीताराम शर्मा** ने कहा कि लोगों की भावना हैं कि शुल्क कम रखा जाए इसलिये यह निर्णय लिया जाता है – **साधारण सदस्यता शुल्क १००/- रुपया, विशिष्ट सदस्यता शुल्क ५००/- रुपया, आजीवन सदस्यता शुल्क ५०००/- संरक्षक सदस्यता शुल्क २१०००/- रुपया विशिष्ट संरक्षक सदस्यता शुल्क ५१०००/- रुपया।** उक्त निर्णय सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ। दूसरे सत्र में राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक की गयी जिसमें भी उपरोक्त प्रस्ताव स्वीकृत कर पारित किया गया।

संगोष्ठी

राजनैतिक चेतना एवं भागीदारी

दिनांक २२ जुलाई २०१२ (रविवार)

श्री संजय हरलालका संचालन करते हुए।

दिनांक २२ जुलाई २०१२ (रविवार) विभिन्न प्रान्तों से आए प्रतिनिधिगण ने दूसरे दिन राजनैतिक चेतना एवं भागीदारी विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन स्थानीय कोलकाता के सल्टलेक स्थित हवेली होटल के सभागार में किया। इस अवसर पर श्री रामपाल अग्रवाल 'नूतन' बिहार, श्री डॉ. जयप्रकाश मूंदड़ा, महाराष्ट्र, श्री ओंकारमल अग्रवाल (असम), श्री सुरेन्द्र लाठ, उड़िसा एवं देश के विभिन्न हिस्सों से आये प्रतिनिधिओं ने अपने विचार प्रकट किए। इस अवसर पर सम्मेलन सभापति श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने कहा कि सम्मेलन का लक्ष्य है राष्ट्र की प्रगति। हम राजनीति में राष्ट्र के प्रगति के लिए आगे आना चाहिए। देश की सेवा, समाज की सेवा की भावना रहेगी तभी जनता जनार्दन से हम जुड़ सकते है। जब जनता आपके साथ जुड़ेगी तो आपके पास धन रहें कोई जरुरी नहीं। मस्सल पॉवर की जरुरत नहीं रहेगी। आप स्वतः पॉवर में आ जाएंगे। आज पश्चिम बंगाल में सुश्री ममता बनर्जी जनता -जनार्दन से जुड़ी तो एकेली महिला ३५ साल पुरानी सत्ताधारी पार्टी को बंगाल में धूल चटा दी। मेरा कहने का तात्पर्य है कि हमें देश सेवा की भावना रख कर ही राजनीति में आगे आना चाहिए।

श्री रामपाल अग्रवाल "नूतन" (पटना)

सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री नूतनजी ने कहा की राजनीति का सीधा अर्थ है राज्य की व्यवस्था से जूड़ना अलवत्ता यह वात अलग है कि आज राजनीति सत्ता, स्वार्थ, एवं जातिवाद, की नीति हो गई है। जवकि विश्व में राजनीति की सर्वश्रेष्ठ नीति रामराज्य की नीति मानी गई है। हमारे समाज में जव कोई व्यक्ति जवतक संघर्ष करता उसको समाज सम्मान नहीं करता। जव वह चोटी पर पहुँच जाता है तव उससे समाज उम्मिद करने लगता है।

राजनीति में आने के लिए अर्थ से एवं साधनों से विहिन होना होगा। परन्तु आज राजनीति का अर्थ हो गया अर्थ से एवं साधनों से सम्पन्न राजनेता। समाज के पास अपना वोट वैंक नहीं है और राजनेताओं से टिकट भी प्राप्त करना चाहता है। आज इस राष्ट्र में राजनीति का अर्थ इतना अपवित्र हो गया। आपको याद होगा कि जव संसद पर हमला हुआ तो आम लोगों की यह आमराय थी कि कुछ लोग मर जाते तो शायद यह संसद पवित्र हो जाती। यह सोचने की वात है। राजनेता खुद को कितना भी सुरक्षित समझे परन्तु आम जनता की नजर में उनका व्यक्तित्व इतना गिर चुका है कि अव कोई भी उनके आदेश को मानने को तैयार नहीं है।

मेरे पिताजी कहते थे कि *"यो लड़को काम से ग्यो, बोले अब इकी शादी क्यां होसी।"* पर जब चुनाव जीत कर आया तो समाज के लोगों ने मेरा सम्मान किया तो पिताजी के आँखों से आंसू छलक पड़े – सुरेन्द्र लाठ

सुरेन्द्रजी लाठ (उडिसा)

उत्कल प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री लाठ ने कहा कि यह आम बात है कि मारवाड़ी समाज राजनीति में रुचि कम रखता है। आज विषय है कि समाज को राजनीति में कितना रुचि रखनी चाहिए। मैं आपको बताना चाहता हूँ, इस बार उडिसा के ग्राम एवं जिला परिषद व नगरपालिका के चुनाव में समाज ने बड़ी भागीदारी निभाई। हमने उड़िसा में राजनैतिक चेतना मंच का गठन कर समाज के सभी चुने एवं हारे हुए लोगों को सम्मानित करने की योजना बनाई है। मैं जब संसद सदस्य था उस समय हमारे समाज के २३ सांसद, संसद में हुआ करते थे। मेरा कहने का उद्देश्य यह है कि हमारा समाज राजनीति में पीछे नहीं है। अब देश में राजनीति गन्दी हो गयी। मेरे पिताजी कहते थे कि *"यो लड़को काम से ग्यो, बोले अब इकी शादी क्यां होसी।"* पर जब चुनाव जीत कर आया तो समाज के लोगों ने मेरा सम्मान किया तो पिताजी के आँखों से आँसू छलक पड़े।

अभी लोकसभा का चुनाव लड़ा हमने अपने समाज की सूचि बनाई पता लगा समाज के १० हजार वोटों में ३००० लोगों का नाम वोटर लिस्ट में है जिसमें से १५०० वोट देने नहीं जाएंगे। १५०० में से ५०० वोट बेकार हो जाएगा और असंगठित १००० वोटर से आप किसके जीत की बात कर सकते हैं। आपकी बात कौन सुनेगा, में तो समाज का हूँ। जीत गया तो भी समाज की सुनुंगा पर यदि दूसरा समाज का व्यक्ति होगा तो आपके वोट बैंक के नाम से ही आपकी बात सुनेगा। आप जबतक अपनी ताकत को नहीं यह पहचानेगें आपकी बात कोई नहीं सुनेगा। किसी भी चुनाव में ५०० वोट भी माने रखते हैं यदि आपके पास ५०० वोट भी संगठित करने की क्षमता हो जाएगी तो १५ लाख स्वतः संगठित हो जाएंगे।

श्री ओंकारमल अग्रवाल (असम)

पूर्वक्त मारवाड़ी सम्मेलन के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री ओंकारमलजी ने कहा कि हमें वोट देने का अधिकार का प्रयोग करना चाहिए। **No vote - No Rest**. समाज में यह बात समझनी होगी। देश की राजनीति गंदी हो गयी है। इस राजनीति को मारवाड़ी समाज ही पवित्र कर सकता है। चाहे जमनालाल बजाज हो या अरविन्द केजड़ीवाल इस समाज पर कोई दाग नहीं लगा सका है। व्यवसाय करतें हैं तो करें पर समाज को राजनीति की ओर अग्रसर होना चाहिए। समाज में राजनीति चेतना आना जरुरी है। समाज को अपने लिए नहीं, देश की विकास के लिए राजनीति में आगे आना चाहिए।

जब समाज का कोई व्यक्ति चुनाव लड़ता है तो समाज के लोग उसे वोट तो देते ही नहीं, सहयोग देने की बात तो बहुत दूर है – डॉ. जयप्रकाश मूँदड़ा

डॉ. जयप्रकाश मुँदड़ा (महाराष्ट्र)

श्री मुँदड़ाजी ने कहा कि राजनीति चेतना तभी संभव जब आपको अपनी चेतना होगी। मेरे पास समाज के ४०० वोट हैं जिसमें २०० अन्य दल से हैं फिर भी ३ बार चुनाव जीत चुका हूँ। हमको राजनीति में आना है तो हमें स्थानीय समाज से जुड़ना होगा। उनके दुःख-दर्द को देखना होगा। मैं राजनीति में आने से पहले चिकित्सा के क्षेत्र जुड़ा हुआ था। उस समय ३ बजे तक ईलाज करता था। उसके बाद जरुरतमंद लोगों की स्थानिय समस्याओं को दूर करने में लग जाता था। आज हम राम मनोहर लोहिया जी की बातें करतें हैं। परन्तु आज की स्थिति अलग है। आज राजनीति में धन का प्रभाव बढ़ चुका है। फिर भी जो राजनेता सीधे जनता से जुड़े रहतें हैं उनसे सभी डरेंगे। इसका अर्थ यह है कि सबकोई जनता की ताकत से घबड़ाते हैं। आप जनशक्ति के सम्पर्क में तभी आ सकते हैं जब आप उनके दुःख में सहभागिता निभायेंगे। जब समाज का कोई व्यक्ति चुनाव लड़ता है तो समाज के लोग उसे वोट तो देते ही नहीं, सहयोग देने की बात तो बहुत दूर है। जब चुनाव जीत जाता हूँ तो मेरे दूर से दूर के रिश्तेदार भी आकर मुझे बताते है कि वे मेरे रिश्तेदार है और समाज का कोई सदस्य जब भी मुझसे मिलने आता है तो उसमें उसका स्वार्थ छुपा रहता है। मैं उसे गलत नहीं मानता परन्तु इस प्रवृति को त्यागना होगा। राजनीति का शिक्षण देना बहुत जरुरी है। आपने ४ वोट नहीं दिया, तो कुछ नहीं होता। परन्तु ४० वोट एकत्रित कर लिए तो आपके वोट की ताकत हो जाती है। उसी प्रकार ४०-४० करके ४००, फिर ४००-४०० करके ४००० वोट फिर देखिये आपकी ताकत स्वतः बन जाएगी।

श्री नन्दलाल अग्रवाल (कोलकाता)

राजनैतिक चेतना समिति के संयोजक ने बताया कि संगठन से ही समाज सुरक्षित हो सकता है एवं राजनीति में दो तरफा लाभ होगा। आप चुनाव लड़ेंगे तो आपके जीतने की आशा होती है। दूसरा सभी दल के लोग आपको सम्मान देंगे। आपकी सुनेंगे। अतः एक ऐसा मंच होना चाहिए जिससे हम समाज में राष्ट्रीय स्तर पर राजनैतिक चेतना की जागृति ला सके।

श्री सुरेन्द्र लाठ ने सूझाव दिया कि वृहद स्तर पर राजनीति चेतना मंच का एक सम्मेलन बुलाया जाना चाहिए जिससे इसका राष्ट्रीय स्तर पर काफी प्रभाव पड़ेगा।

रामअवतार पोद्दार (कोलकाता)

इस अवसर पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार ने बताया कि समाज चुनाव के दिन छुट्टी मनाता है जो गलत है। समाज को चाहिए कि वे चुनाव के दिन अपना वोट जरूर देवें।

श्री विनय सरावगी (रांची, झारखण्ड)

झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री विनय सरावगी ने कहा कि हमारे समाज में राजनीति चेतना शुरु से ही है। भले ही इसमें शिथलता आई हो पर चेतना मे कोई कमी नहीं है। अब हमें इस क्षेत्र में ओर काम करने की जरुरत है। हमें छोटे-छोटे चुनावों में लड़कर अपनी ताकत बढ़ानी चाहिए।

सम्मेलन इसमें कोई पार्टी नहीं बने। सभी का साथ देना चाहिए एवं अपने समाज के किसी व्यक्ति को पार्टी की टिकट मिले तो उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करना चाहिए।

श्री नन्दलाल सिंघानिया (कोलकाता)

आज सत्ता में भ्रष्ट लोगों का जमावाड़ा हो चुका है। देश सेवा गौन होते जा रहा है। पहले लोगों में धारना थी कि हम चन्दा देने वाले हैं और वे लेने वाले हैं। अब लोग कहते है यह अमूक पार्टी का है। अब चंदा नहीं मांगने आते। कहने का अर्थ है आप राजनीति में जैसे-जैसे ताकतवर बनेगें वैसे-वैसे आपको लोग कम तंग करेंगे।

श्री विजय गुजरवासिया (कोलकाता)

पश्चिम बंग प्रादेशिक सम्मेलन के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री गुजरवासिया ने कहा कि समाज की सबसे बड़ी शक्ति संगठन होती है हमें संगठित होकर ही समाज की सेवा कर सकतें हैं।

श्री महेश जालान (पटना)

राजनीति में भाग लें या राजनीति से भाग लें? यह हमें सोचना चाहिए। हमें एक एजेन्डा लेना होगा। ताकि समाज में राजनैतिक चेतना का संचार हो सके।

श्री जगदीश पाटोदिया (बंगाल)

कुन कहयो या धरती काँची है.....

समाज में राजनीति चेतना लाने के लिए हमें पुनः सम्मेलन के वैनर तले इस चेतना को जागृत करना होगा। हमारे समाज में राजनैतिक चेतना लुप्त होने के कारण ही हमारी राजस्थानी भाषा को आज संसद से मान्यता नहीं मिल पा रही है।

श्री जगदीश मुँदड़ा (कोलकाता)

समाज के लोगों को स्थानिय समाज से समरस होना होगा। तभी आपको राजनीति में सफलता मिलेगी।

श्री शंभु चौधरी (कोलकाता)

इन्होंने कहा कि समाज को घृणित भावना के साथ जीना है तो वह सिर्फ धन कमाने में समय दें। यदि समाज को प्रतिष्ठा के साथ जीना हो तो उसे अपनी राजनीति ताकत को पहचाननी होगी।

श्रीमती सुषमा अग्रवाल (दिल्ली)

हमारे शब्द कोष में एक अक्षर आता है – 'पी'। पी से ही पैसा, पॉवर एवं पॉलिटिक्स शब्द बनता है आप समाज की महिलाओं को भी सामने लाऐं।

श्री ओम लड़िया (कोलकाता)

समाज का हर व्यक्ति को अपनी चेतना जगानी होगी तभी राजनैतिक चेतना समृद्ध हो सकेगी।

कमलेश नाहटा (मध्यप्रदेश)

राजनीति के साथ देश सेवा की भावना हममें होनी चाहिए।

धन्यवाद ज्ञापन श्री संतोष सराफ, महामंत्री ने दिया। मंच का संचालन श्री संजय हरलालका, संयुक्त महामंत्री ने किया। श्री आत्माराम सौंथालिया, श्री पवन गोयनका, श्री रामनिवास चोटिया, श्रीमती विमला डोकानिया, श्री विजय डोकानिया सहित उक्त अवसर पर विभिन्न प्रान्तों के प्रतिनिधि बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

सम्मेलन के माननीय सदस्यों से एक निवेदन

– **कमल नोपानी**, पटना

मारवाड़ी समाज एक प्रबुद्ध समाज है। यह गतिशील तथा क्रियाशील समाज है। अपने परिश्रम, बुद्धि और विवेक संगठात्मक शक्ति से जीवन को सुखमय तथा व्यापार को ऊँच्चाईयों पर ले जाने में सक्षम हुआ।

संगठन समाज की, समाज व्यक्ति की शक्ति है। व्यापार चलाना भी एक संगठन है। और इसे हम सफलतापूर्वक चलाने का कार्य करते हैं लेकिन जब समाज के संगठन को मजबूत करने की बात होती है, हम सब मिलकर भी इसे सफलतापूर्वक संगठित नहीं कर पाते हैं।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के आजीवन सदस्यों की संख्या लगभग ३००० है। सभी प्रांतों को मिलाकर देखा जाये तो इसकी संख्या लगभग २० हजार के आस-पास जाती है, जबकि हमारे प्रवासी मारवाड़ी समाज की संख्या पूरे भारतवर्ष में २ करोड़ के आस-पास है।

उपरोक्त बातों से स्पष्ट होता है कि हम समाज को संगठित करने में असफल रहे हैं लेकिन हमें इससे विचलित होने की आवश्यकता नहीं है। अगर हम शाखा, प्रांत एवं अखिल भारतीय स्तर पर एक कार्यकर्त्ता की तरह सदस्य बनाने के प्रयास करें तो हमें संगठन को मजबूत करने में निश्चित रूप से सफलता मिलेगी। इसके लिए निम्न विन्दुओं पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने एवं उसे अमल में लाने की आवश्यकता है –

१. सम्मेलन के प्रति अपने लोगों में विश्वास जागृत करना।

२. समाज के किसी भी भाई-बहनों या परिवार में कोई भी अप्रिय घटना घटती है। उस क्षेत्र की शाखा / प्रांत के पदाधिकारियों को जाकर जानकारी प्राप्त कर उन्हें यथा संभव सहयोग करके उनमें सम्मेलन के प्रति विश्वास बढ़ाने की आवश्यकता है।

३. समाज के लोगों के बीच जाकर मतदाता पहचान पत्र बनवाना एवं मतदान करने के लिए उन्हें प्रेरित करना। जिससे आने वाले समय में राजनीतिक दृष्टिकोण से भी हमारा समाज मजबूत हो सके।

४. स्थानीय अन्य जातियों के लोगों से आपसी तालमेल बढ़ाना ताकि हमारी संगठन की पहचान उनके बीच बन सके।

५. समाज में कैंसर की तरह तेजी से बढ़ रहे आडम्बर एवं धार्मिक आयोजनों पर हो रहे आवश्यकता से अधिक खर्चों के कारण हम समाज के माध्यम एवं आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को जोड़ने में असफल रहते हैं। इस पर अंकुश लगाने हेतु हमें मिलकर सार्थक प्रयास करने होंगे। जिसमें हमारे सम्मेलन के पदाधिकारियों की भूमिका अहम होनी चाहिए।

६. समाज के लोगों को सम्मेलन से जोड़ने का कार्य शाखास्तर से शुरु करके प्रांत स्तर पर एवं राष्ट्रीय स्तर पर करने की आवश्यकता है।

७. एकल सदस्यता अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आगामी ३० अगस्त से राष्ट्रीय स्तर पर लागू हो जाएगी।

अन्त में आप सभी समाज बन्धुओं से हमारा नम्र निवेदन है कि उपरोक्त बातों पर हम सभी मिलकर प्रयास करें तो हमें संगठन को मजबूत करने में निश्चित रूप से सफलता मिलेगी। आपका थोड़ा सा सहयोग समाज को संगठित करने में मील का पत्थर साबित होगा।

व्यक्ति समाज का आईना है। बिना समाज के व्यक्ति की पहचान नहीं है। समाज को साथ लेकर चलना हर व्यक्ति का दायित्व है। समाज के बिना अस्तित्व अधूरा है।

अपने बच्चों को स्वयं कमजोर बनाती माँये

– भँवर लाल गट्टानी

अंगरेज तो देश से चले गये मगर अपनी अंगरेजियत हमारे देश में ही छोड़ गये। हमारा देश १९४७ में आजाद हुआ मगर उससे पहले १५० वर्षों तक यहां अंग्रेजों की हुकुमत की आदत इन १५० वर्षों की गुलामी ने हमारी मानसिकता को इस कदर जकड़ लिया है कि आज भी, आजादी के ६५ साल बाद भी हम अंगरेजी के ही गुण गा रहे है अंगरेजी के यह बने हुए है। और अंगरेजी भाषा के सामने हम अपनी भाषा अपनी मातृभाषा या राष्ट्र भाषा को हेय समझते हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हम अपनी आँखों से देख रहे हैं कि देश में अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की संख्या ही सर्वाधिक है इसके मुकाबले स्थानीय भाषा या हिन्दी भाषा के विद्यालय नगण्य है। ये विद्यालय विद्या के मन्दिर नहीं, विद्या के कारखाने यानि इन्डस्ट्रीज बने हुए हैं जैसे व्यापार के लिये हम कोई कारखाना बैठाते है कि हमें लाभ प्राप्त होगा। वैसे ही आज लोग जगह-जगह अंगरेजी मिडियम के स्कूल खोल कर लाभ प्राप्त कर रहे है खूब प्रोफिट कमा रहे हैं। इन स्कूलों की फीस इतनी अधिक रखते हैं कि ये एक सम्मानित व्यवसाय बन चुका है।

ये विद्यालय विद्या के मन्दिर नहीं, विद्या के कारखाने यानि इन्डस्ट्रीज बने हुए हैं जैसे व्यापार के लिये हम कोई कारखाना बैठाते है कि हमें लाभ प्राप्त होगा। वैसे ही आज लोग जगह-जगह अंगरेजी मिडियम के स्कूल खोल कर लाभ प्राप्त कर रहे है खूब प्रोफिट कमा रहे हैं। इन स्कूलों की फीस इतनी अधिक रखते हैं कि ये एक सम्मानित व्यवसाय बन चुका है।

चूंकि हम लोग भी अंगरेजी के इतने दीवाने बन गये है कि अपने बच्चों को महंगे से महंगे स्कूल में भर्ती करवाना चाहते है। चाहे लाख रुपये डोनेसन देना पड़े हमारे बच्चे वहीं पढ़ेंगे। इस स्थिति पर अगर विचार करें तो ये उच्च वर्गों के लोगों के लिए तो ठीक है क्योंकि उनके पास पैसों की कोई कमी नहीं होती। मगर जब मिडल क्लास के लोगों की भी यही सोच बन जाए तो ये लोन लेकर डोनेसन देते हैं अपने बच्चों को अच्छी स्कूलों में दाखिला दिलवाने के लिए। एडमिशन के बाद तरह-तरह की फीस देते देते आर्थिक हालत बद से बदतर होती जाती है। बच्चों को लेने के लिए सुबह स्कूल बस आ जाती है शाम को स्कूल बस छोड़ जाती है। ये तो हुई आर्थिक स्थिति की बातें। अब इस लेख के मूल विषय पर आते हैं कि मातायें अपने बच्चों को कमजोर कैसे बनाती है। कोई भी स्कूल बस बच्चे को उसके घर से नहीं उठाती है बल्कि मेन रोड पर कुछ स्थान तय किये हुए होते हैं और मातायें या अभिभावकगण बच्चों को वहां छोड़ते है।

जैसा कि हम लोग ऐसा देखते है कि बच्चों से अधिक संख्या उनके माँ बाप की या अभिभावकों की रहती है किसी बच्चे के तो माँ बाप दोनों छोड़ने आते हैं और ये बात भी सर्वविदित है कि Kg II में पढ़ने वाले बच्चे की पीठ पर चार Kg का बस्ता होता है। किताबों की संख्या तो अधिक होती ही है इसके अलावा बच्चे का टिफिन का डब्बा, पानी की बोतल आदि का वजन और बढ़ जाता है। और ये बस्ते का वजन घर से लेकर स्कूल बस के पाइन्ट तक बच्चे की माँ अपनी पीठ पर लाद कर ले जाती है या उसका पिता या अभिभावक होता है। माँ बाप की ये मानसिकता बनी रहती है कि हमारे बच्चे को कोई बोझ न उठाना पड़े। माता पिता ये भूल जाते है कि जीवन फूलों की सेज नहीं है इन राहों में कांटे की बहुत बिछे हुए हैं। आगे चल कर बच्चे को कैसी कैसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। अगर बच्चा शुरु से ही इन कष्टों का सामना करने में सक्षम न ही होगा कमजोर होगा तो भविष्य में आनेवाले कष्टों को कैसे झेल पायेगा। अभी जो बच्चा अपने बस्ते का भार उठाने में सक्षम नहीं होगा तो आगे अपने परिवार का अपने समाज का, या देश का भार उठाने में सक्षम कैसे होगा? उन माता पिता की मानसिकता पर तरस आता है कि वे अपने बच्चों को इतना कमजोर क्यों समझ रखे है। वे स्वयं में सोच कर देखें कि क्या वे अपने बच्चों को स्वयं कमजोर नहीं बना रहे है। ये ऐसी बात है कि हर माँ-बाप अपने बच्चे को सुखदायक स्थिति में रखना चाहते है मगर उन्हें इतना नाजुक भी नहीं बनाना चाहिये कि आगे चल कर थोड़े से कष्ट से बच्चा विचालित हो जाये, लड़खड़ा जायें। उन्हें तो अपने बच्चों को हमारे देश के शूरवीरों की गाथायें सुना कर उन्हें साहसी बनाना चाहिए ताकि महारणा प्रताप या वीर शिवाजी या झांसी की रानी जैसे शूरवीर बन कर देश में एक मिशाल कायम कर सके और अपने माता पिता का और अपने देश का नाम रौशन कर सके।

१८९/१/१, बंगुड़ एवेन्यू, ब्लाक-बी,
कोलकाता - ७०० ०५५

"चरित्र क्रांति का दौर शुरु हो"

– ललित गर्ग

सोना का मूल्य अपनी सर्वोच्च ऊंचाई पर पहुंचा। प्रश्न है कि इस सोने को सर्वोच्च ऊंचाई पर पहुंचाने वाले लोग क्या राष्ट्र के असली सोने को भी ऊंचाई देने का प्रयत्न कर रहे हैं? राष्ट्र का असली सोना न तो बत्तीस हजार दो सौ के मूल्य को छूने वाला और न पूजा स्थलों के कलश पर जड़े जाने वाला पदार्थ है। असली सोना देश का चरित्र है, मर्यादाएं हैं, मनोबल है। असली सोना देश की एकता में है। सैनिकों के बाहुबल में है। प्रशासकों के बुद्धि कौशल में है। देशवासियों की निष्ठा और ईमानदारी में है, देश की उन्नत शिक्षा प्रणाली में है, देश के ईमानदार और चरित्रनिष्ठ राजनयिकों में है। हमें अच्छाइयों रूपी स्वर्ण को ऊंचाई देनी है, न कि पदार्थरूपी सोने को।

> *आज हम जीवन नहीं, मजबूरियां जी रहे हैं। जीवन की सार्थकता नहीं रही। अच्छे-बुरे, उपयोगी-अनुपयोगी का फर्क नहीं कर पा रहे हैं। मार्गदर्शक यानि नेता शब्द कितना पवित्र व अर्थपूर्ण था पर नेता अभिनेता बन गया। नेतृत्व व्यवसायी बन गया। आज नेता शब्द एक गाली का प्रभावशाली शब्द बन चुका है।*

आज हम जीवन नहीं, मजबूरियां जी रहे हैं। जीवन की सार्थकता नहीं रही। अच्छे-बुरे, उपयोगी-अनुपयोगी का फर्क नहीं कर पा रहे हैं। मार्गदर्शक यानि नेता शब्द कितना पवित्र व अर्थपूर्ण था पर नेता अभिनेता बन गया। नेतृत्व व्यवसायी बन गया। आज नेता शब्द एक गाली का प्रभावशाली शब्द बन चुका है।

अब यह केवल तथाकथित नेताओं के बलबूते की बात नहीं रही कि वे गिरते मानवीय मूल्यों को थाम सकें, समस्याओं में ग्रस्त सामाजिक व राष्ट्रीय ढांचे को सुधार सकें, तोड़कर नया बना सकें। इसके लिए नयी पीढ़ी को सुसंस्कारों में ढालने की जरूरत है और जरूरत इस बात की भी है कि वे एक ऐसी शिक्षा पद्धति में सुशिक्षित हो, जो भेदभावरहित हो, समतामूलक हो, जो एक प्रशस्त मार्ग है और सही वक्त में सही बात कहें।

अगर हमें इस देश में बदलाव लाना है ईमानदारी को प्रतिष्ठित करना है, राजनीति को आदर्श साये में ढालना है और चरित्र की प्रतिष्ठा करनी है तो जड़ों को सींचना होगा, केवल पत्तों को सींचने से बदलाव नहीं आ सकता। हमारी सशक्त जड़ है शिक्षा प्रणाली। देश में लोकतंत्र होने के बावजूद एक साजिश चल रही है कि जैसे भी हो सत्ता पर अधिकार सम्पन्न वर्ग का ही रहना चाहिए और इसके लिये शिक्षा प्रणाली को कारगर हथियार के रूप में प्रयोग किया जा रहा है। पूरी शिक्षा प्रणाली का बाजारीकरण करके इसी लक्ष्य को और मजबूत किया गया है। इसी से एक नई किस्म की वाग्मिता पनपी है जो किन्हीं शाश्वत मूल्यों पर नहीं बल्कि भटकाव के कल्पित आदर्शों पर आधारित है। जिसमें सभी नायक बनना चाहते है, पात्र कोई नहीं। भला ऐसी व्यवस्था किस के हित में होगी?

स्वार्थ के घनघोर बादल मंडरा रहे हैं, सब अपना बना रहे है, सबका कुछ नहीं। और उन्माद की इस प्रक्रिया में आदर्श बनने की पात्रता किसी में नहीं है, इसलिए आदर्श को ही बदल रहे हैं, नये मूल्य गढ़ रहे हैं। नये बनते मूल्य और नये स्वरूप की तथाकथित मनुष्यता क्रूर भ्रष्ट अमानवीय और जहरीले मार्गों पर पहुंच गई है। पर असलियत से परे हम व्यक्तिगत एवं दलगत स्वार्थों के लिए अभी भी प्रतिदिन मिथ निर्माण करते रहते हैं। आवश्यकता है केवल थोक के वादों से भाषण न दिये जायें, कथनी और करनी यथार्थों पर आधारित हों। उच्च स्तर पर जो निर्णय लिए जाएं वे देश हित में हों। दृढ़ संकल्प हों। एक अरब देशवासियों की मुट्ठी बंधे, विश्वास जमे।

आवश्यकता है देश में ऊंचे कद वाले नेता हों। सेवा और चरित्र निर्माण के क्षेत्र में श्रेष्ठ पुरुषों की एक श्रृंखला हो। केवल व्यक्ति ही न उभरे, नीति उभरे, जीवनशैली उभरे। चरित्र की उज्ज्वलता उभरे। हरित क्रांति, श्वेत क्रांति के बाद अब चरित्र क्रांति का दौर हो। वरना मनुष्यत्व और देश की अस्मिता बौने होते रहेंगे। महात्मा गांधी के प्रिय भजन की वह पंक्ति – 'सबको सन्मति दे भगवान' में फिलहाल थोड़ा परिवर्तन हो – 'केवल आकाओं को सन्मति दे भगवान।'

With Best Compliments From :-

M/s ROAD CARGO MOVERS (P) LTD.

1, GIBSON LANE, 2ND FLOOR, SUIT NO :- 211
KOLKATA -700 069

Tele No. : *2210-3480, 2210-3485*
Fax No. : *2231-9221*
e-mail : *roadcargo@vsnl.net*

BRANCHES & ASSOCIATES AT

DURGAPUR, HALDIA, CHENNAI, HYDERABAD, BANGALORE, ICHAPURAM, BHIVANDI, COCHI, MUMBAI, VIJAYWADA, COIMBATORE, GAZIABAD, PONDICHERRY, VISAKHAPATNAM

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

मारवाड़ी सम्मेलन ने मेधावी छात्रों को सम्मानित किया

विजय गुजरवासिया पुनः अध्यक्ष निर्वाचित

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष पद (२०१२-२०१४) के लिए श्री विजय कुमार गुजरवासिया को सर्वसम्मति से चुन लिया गया। यह सूचना चुनाव अधिकारी श्री शम्भु चौधरी ने देते हुए बताया कि अध्यक्ष पद के लिए सिर्फ एक ही नामांकन पत्र प्राप्त हुआ था। अतः सर्वसम्मति से श्री विजय कुमार गुजरवासिया को पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का आगामी कार्यकाल के लिए पुनः अध्यक्ष चुन लिया गया। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की तरफ से श्री गुजरवासियाजी को बधाई देते हुए राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार।

कोलकाता, १ जुलाई। पश्चिमवंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से आज माध्यमिक एवं उच्चमाध्यमिक के ५१ स्कूलों के १४१ मेधावी छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया। सम्मेलन के अध्यक्ष विजय गुजरवासिया ने स्वागत भाषण में कहा कि मेधावी छात्रों का मनोबल बढ़ाने के लिए गत तीन वर्षों से इस तरह के समारोह का आयोजन होता है। उन्होंने कहा कि बच्चे देश के भविष्य है। इन्हें प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। सचिव विजय डोकानिया ने सम्मेलन की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम संयोजक राम गोपाल बागला ने कहा कि बदलते समय में शिक्षा के स्तर में भी बदलाव हो रहा है। कुछ वर्ष पहले तक छात्रों का अंक प्रतिशत कम रहता था पर अब शत प्रतिशत अंक हासिल करने में भी छात्र सफलता प्राप्त कर रहे है। उन्होंने कहा कि छात्रों की तुलना में छात्राएं काफी अच्छा अंक हासिल कर रही है जो आने वाले पीढ़ी के लिए शुभ संकेत है। उद्घाटनकर्ता एवं उद्योगपति प्रह्लादराय अग्रवाल ने कहा कि समाज के बच्चे हर क्षेत्र में अव्वल हो रहे हैं। उन्होंने सम्मेलन के पदाधिकारियों से अनुरोध किया कि मेधावी बच्चों को और प्रत्साहित करने एवं हर संभव सहयोग करे। प्रधान अतिथि बनवारी लाल मित्तल ने मेधावी छात्रों से लगातार सफलता हासिल करने की अपील की। उन्होंने छात्रों के अच्छे व्यक्ति बनने की सलाह दी। प्रधान वक्ता वासुदेव टिकमानी ने कहा कि मेधावी छात्रों ने केवल स्कूलों का नाम उज्ज्वल करते हैं बल्कि देश का भी रोशन करते हैं। जो बच्चे प्रतिद्वंदिता स्वीकारते है वे आगे बढ़ते है। सत्यनारायण तिवारी के गणेश वंदना से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम का संचालन किया महावीर प्रसाद रावत ने। कार्यक्रम को सफल बनाने में शिवकुमार अग्रवाल, रामप्रसाद भालोटिया, दामोदर प्रसाद विदावतका, विश्वनाथ सिंहानिया, पवन शर्मा, सुधीर बागला, रतन गोयल, शुभम डोकानिया, आयुष बागला आदि सक्रिय थे।

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

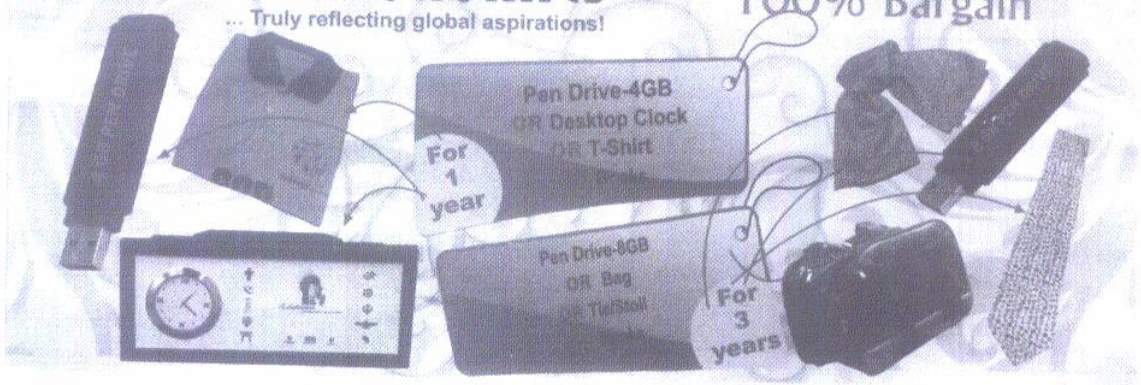

Subscribe **Business Economics** :

Subscribers may send choice of books valued equal to subscription

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	US $	UK £	Gift Option
☐	3 Years	72	1440/-	1440/-	1440/-	216	144	☐ 8GB Pen Drive OR ☐ Bag OR ☐ Tie/Stoll OR ☐ Books
☐	1 Year	24	480/-	480/-	480/-	72	48	☐ 4GB Pen Drive OR ☐ Desktop Clock OR ☐ T-Shirt OR ☐ Books
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150)	240/-	150/-	390/-	-	-	☐ Exclusively for Students/Institutions
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150)	240/-	150/-	390/-	-	-	☐ EXCLUSIVELY FOR SENIOR CITIZENS

For 1 year Book of choice upto ₹ 480 | For 3 years Books of choice upto ₹ 1440

Business Economics

Subscription Form

Name: Mr./Ms. ....

Address ....

.... City/District ....

State .... Country .... Pin Code ....

E-mail .... Mobile .... Landline .... STD CODE

REMITTANCE DETAILS

Enclosed Cheque / DD No .... dated .... for Rs .... drawn on ....

In favour of CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED

Signature .... date ....

Mail this subscription form along with your Cheque / DD to : Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India. Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact : Kolkata : Shaonli Majumder : 033 2223-0368 • **Mumbai** : Rajendra Singh : 90290 84951
New Delhi : Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima** : Povotso Lohe : 94360 05889

Lucky DRAW

QUARTERLY LUCKY DRAW FOR THE SUBSCRIBERS :
1st Prize : INR 2000/- ● 2nd Prize : INR 1000/- ● 3rd Prize : INR 500/-

नाटक

संस्कार

हमारी बहुएं - बेटियों से प्यारी

– हरिप्रसाद कानोड़िया

विवाह बड़ी सादगी से आनन्द पूर्वक हो जाता है। प्यारी बहु राधिका और बेटा हनीमुन और देव स्थल से आ जाते है। दोंनो खुश है। सेठ जी और सेठानी सुबह की चाय के लिये बैठे हैं। दोंनो अखबार पढ़ रहे है। बहु राधिका आती है। मां – बाप के चरण स्पर्श करती है।

सेठानी – बहू राधिका आओ। शिव जी और अपने इष्ट का स्मरण एवं प्रार्थना करके नाश्ता कर लो। बेटा आकर बैठ जाता है, चाय नाश्ता के लिये।

सेठ जी – बेटा, राधिका को कोई भी चीज की जरूरत हो तो उसे ला देना। बहू से कहना आपना घर समझे। बेटा अब व्यापार भी धीरे-धीरे तुम सम्भालो। निर्देश भी दो। मैं तुमको समझा दिया करुंगा उसी तरह तुम निर्देश देना सभी से मीठा बोलना। मधुर स्वभाव रखना। किसी की गलती हो तो उसको समझा देना। सभी क्षेत्र में ज्ञान हासिल करना।

जैसे कानून, एकाउन्टस, फाईनेन्स, लेवर मेनेजमेन्ट, उत्पादन की तकनीकी, मशीनों के विषयों मे सभी बातों को समझना। तभी कहां - क्या कठिनाई है समझ सकोगे – और उसको संभाल सकोगे। बेटा – हां बाबू जी – आपके आदेशानुसार सब करूंगा।

बहू राधिका – पूजा करके आ जाती है। पूजा का प्रसाद सभी को देती है।

सेठानी – आओं बैठो! चाय नाश्ता साथ में ले लो। बाबू जी व्यापार की और दुनिया की बातें करेंगे। सुनने से काफी ज्ञान होता है समय पर काम आता है। मैं भी काफी कुछ सिख गई हूं।

सेठ जी – तुमलोग सामने बैठते हो तो बहुत अच्छा लगता है। अंग्रेजी में एक कहावत है जो परिवार साथ में प्रार्थना करता है और नाश्ता भोजन साथ – साथ करता है बहुत आनन्द से रहता है। बेटी – राधिका तुम्हारा यह अपना घर है। आदर देते हुए स्वतंत्र रहना। अब हमलोग तुम्हारे माता - पिता है। संकोच मत करना। हमलोगों की कोई बात अच्छी नहीं लगे तो बतला देना। हम अपने को सुधारेंगे। गीता में भगवान श्री कृष्ण कहते है निस्वार्थ भाव से कर्म किये जा मैं फल देता रहूंगा। तुम अपने किसी भी इच्छा का दमन मत करना। जब भी इच्छा हो तो मां - बाप से मिलने चली जाना।

बहू राधिका – हां, बाबू जी मै बहुत खुश हूं। मां भी मुझे बहुत-बहुत प्यार से रखती है।

सेठ जी – आओं बच्चों। हरि ऊं! बेटा वर्तमान व्यापार को अच्छी तरह से संभालते हुए, व्यापार को बढ़ाना है। सादगी से रहना है। आडम्बर नहीं करना है। ऐसा कोई गलत काम नहीं करना, ईमान्दारी से व्यापार करना। मां लक्ष्मी जब धन देती है तो उसका सदऊपयोग करते रहना चाहिए। जहां तक संभव है वहां तक भलाई करना चाहिए। कर्म और मन से सब का भला सोचने और करने से भगवान नारायण और मां लक्ष्मी खुश होती है। प्रह्लाद ध्रुव की कहानी हमेशा याद रखना एक कहावत है। भालाई कर दरिया में डाल यानि भालाई कर के भूल जाना। बेटी राधिका तुम भी ध्यान रखना। तुम्हारे पिहर मे सब कुशल मंगल है। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो ४ - ५ घंटे ऑफिस जा सकती हो तो चले जाना। मेरी भी मदद कर सकती हो। तुम शिक्षा के क्षेत्र में भी कुछ कर सकती हो।

राधिका – हां बाबू जी, मैं सोचती हूँ।

सेठजी – ठीक है बेटा राधिका। कुछ काम करते रहोगी तो मन लगा रहेगा। बेकार की बातों में समय नहीं बरबाद होगा। खाली दिमाग शैतान का घर होता है। स्वास्थ्य पर ध्यान देना। व्यायाम, योगा और सुबह - शाम टहलना जरूरी है। रात में पार्टी में देरी तक मत रहना। अपने समय से चले आना। नारायण समय से चले आता था। अब शायद शादी-सुदा दोस्तों के आग्रह को टाल नहीं पाये। मुझे विश्वास है, कि नारायण बेटा में कोई गलत आदत नहीं है।

फिर भी तुम ध्यान रखना। नारी तो प्रेरणा का स्रोत होती है। गलत लोगों का संगत बिलकुल नहीं करना। दोस्त कहेगा एक पेग में कुछ नही होता नशा भी नहीं आता है। परन्तु लक्ष्मण रेखा लाघने में तकलीफ आती है। अपने मर्यादा में रहने पर ही जीवन का आनंद आता है। परमपिता खुश होते है। मां – बाप तो खुश रहते ही हैं। तुम हिमालय की तरह अटल रहना। नारायण को सभी तरह का सहयोग देना। बातों का भी सम्मान करना। अपना स्वाभिमान रखते हुए दासी नहीं बनना है। उसे अपने हाथ से भी काम करने देना। नहीं तो आदत खराब हो जायेगी कभी अकेले रहना होगा तो काफी कष्ट होगा। बुढ़ापा में तो विशेष कर। पुरा परिवार रोज नाश्ते पर तो जरूर मिलते है। डिनर भी साथ में करने की कोशिश करना। मानवता की सेवा भी करते रहना।

नाटक का उद्देश्य – सादगी से जीवन व्यतीत करने की यात्रा पर आनंद से चलते रहना है। खुश रहना खुशी बांटना, मानवता के कल्याण की भावना रखना।

बहू को प्रेम ही प्रेम देना – बेटा – बेटी से बढ़कर बहू को खुश रखना। परिवार का कल्याण और खुशी बहू की खुशी पर ही है। जिस घर में बहू खुश है उस घर में मां लक्ष्मी का निवास है। लक्ष्मी जी भगवान नारायण के साथ रहती है। खुशी से रहो, खुश रखो। जीवन का यही उद्देश्य है।

(लेखक सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं।)

सूचनासार - १

मारवाड़ी सम्मेलन व फाउण्डेशन ने पीड़ितों में बांटी राहत सामग्री

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं मारवाड़ी सम्मेलन फाउण्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में कोलकाता के बेलियाघाटा-पागलडांगा ईलाके में लगी आग से हुए बेघर लोगों के बीच राहत सामग्री वितरित की।

इस मौके पर केन्द्रीय राज्य स्वास्थ्य मंत्री श्री सुदीप बंद्योपाध्याय, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, पूर्व अध्यक्ष सीताराम शर्मा, विधायक परेश पाल, पार्षद जीवन साहा, उपाध्यक्ष रामअवतार पोद्दार, महामंत्री संतोष सराफ, कोषाध्यक्ष आत्माराम सोंथलिया, संयुक्त महामंत्री कैलाशपति तोदी, पूर्व पार्षद ओम प्रकाश पोद्दार आदि उपस्थित थे।

वितरण सामग्री में प्रेशर कूकर, मछहरी, वर्तन, कपड़े आदि दिये गये। इस मौके पर मंत्री श्री बंद्योपाध्याय ने कहा कि मारवाड़ी सम्मेलन जरुरतमंदों की सेवा के हेतु सदैव तत्पर रहता है।

छत्तीसगढ़ मारवाड़ी सम्मेलन

जीवन जीने की कला बच्चों का आर्ट एक्सल संपन्न

जीवन को योग प्राणायाम व खेलकुद के माध्यम से सरल बनाया जा सकता है, इन सब बातों को शामिल करते हुए आर्ट ऑफ लिविंग के प्रशिक्षक प्रलय व प्रेरणा वंडलकर ने नॉलेज प्वाइंट के तहत बताया। मौका था अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन छत्तीसगढ़ प्रांत एवं आर्ट ऑफ लिविंग द्वारा बच्चों के आर्ट एक्सल प्रशिक्षण शिविर के समापन का। समता कॉलोनी स्थित मित्तल भवन में २१ मई से प्रारंभ हुए इस छः दिवसीय एक्सल कोर्स के अंतिम दिन सुदर्शन क्रिया के अलावा जीवन के कई प्वाइंट्स के साथ-साथ रोचक गेम्स व पहेलियों के माध्यम से जीवन जीने की कला की जानकारी दी गई। जिसमें ८ से १३ वर्ष के उम्र के ६३ प्रतिभागियों ने भाग लिया। जिसमें जीवन में सफलता, परेशानी से लड़ना, मानसिक व शारीरिक विकास, दोस्त बनाने की कला, आत्मविश्वास मजबूत करना, सेवा भावना जैसी विभिन्न जीवन की कठिनाइयों से लड़ने के उपाय बताए गए। व्यक्ति विकास केन्द्र, समता कॉलोनी व अ.भा. मा. सम्मेलन छ.ग. प्रांत महामंत्री घनश्याम पोद्दार ने बताया कि आर्ट ऑफ लिविंग के इस कोर्स में योगाभ्यास, श्वास प्रणाली, ध्यान व

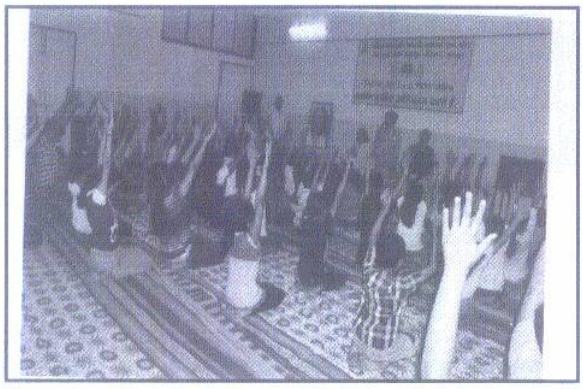

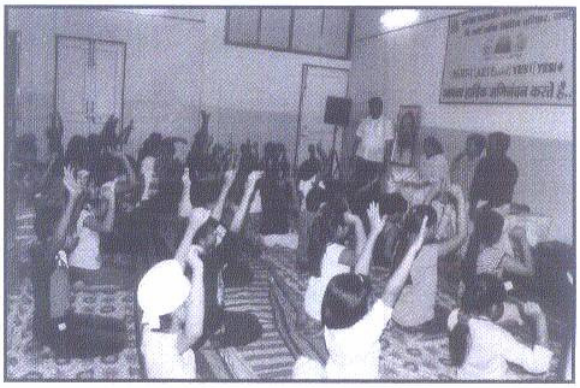

सुदर्शन क्रिया के ३० मिनट के नियमित अभ्यास से मानसिक शारीरिक और आत्मिक बल तरोताजा हो उठता है। इस शिविर में कुल ६३ प्रतिभागी भाग ले रहे हैं, अभिभावकों ने बताया कि इस शिविर में बच्चों के शरीर व मन को अद्‌भुत संतुलन प्राप्त हो रहा है तथा शारीरिक-मानसिक अस्वस्थता से भी छुटकारा मिला है। आर्ट ऑफ लिविंग एवं अ.भा.मा. सम्मेलन छ.ग. प्रांत के प्रदेश सह सचिव सत्येन्द्र अग्रवाल ने जानकारी दी है कि २० से २२ घंटे के यह कार्य है जो कि ६ दिनों में सिखाया जाता है। मुख्यतः सांस प्रक्रिया पर आधारित सुदर्शन क्रिया इस कोर्स की मुख्य अंग है। कार्यक्रम का संचालन सुयश अग्रवाल ने किया। इसके पश्चात् बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

इस कार्यक्रम में छ.ग. प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रदेश महामंत्री घनश्याम पोद्दार एवं प्रदेश-सह सचिव सत्येन्द्र अग्रवाल के अलावा कमल तिवारी, ऋषि अग्रवाल, श्रीमती शशि पोद्दार, श्रीमती निशा अग्रवाल, लक्ष्मी तिवारी, बृजेश शुक्ला, विक्रम अग्रवाल, मारवाड़ी सम्मेलन व ऑर्ट ऑफ लिविंग परिवार के सदस्य उपस्थित थे।

"बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की गतिविधियाँ"

(अक्टूबर २०११ से मार्च २०१२ तक)

२ **अक्टूबर** २०११ को सम्मेलन भवन में समाज के प्रवर्त्तक महाराजा अग्रसेन की जयन्ती मनाई गई। कार्यक्रम में बिहार सरकार के कृषि मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उक्त कार्यक्रम में जहानाबाद के वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्री जय नारायण को सम्मानित किया गया।

१६ **अक्टूबर** को पटना में कार्यकारिणी की बैठक सम्पन्न हुई।

तदोपरांत बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी दीपावली उत्सव का विशाल आयोजन किया गया। पटना के जिलाधिकारी श्री संजय कुमार सिंह के कर कमलों द्वारा कार्यक्रम का उद्घाटन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री दशरथ कुमार गुप्ता थे।

२० **नवम्बर** २०११ को जन कल्याण पत्र का इ़ा किया गया।

कड़ाके की ठंढ से बचने के लिए लगभग ६ हजार कम्बल का वितरण पटना, आरा, किशनगंज, पूर्णिया, फारबिसगंज, कटिहार, जमालपुर, सुपौल, मुंगेर, नवगछिया, मुजफ्फरपुर, छपरा, सिवान, बड़हिया, भागलपुर एवं गया शाखा ने किया।

पटना सिटी शाखा द्वारा २५ दिसम्बर को चौक स्थित श्री सनातन धर्म सभा प्रांगण में राजस्थानी कला-संस्कृति, वेश-भूषा पर आधारित कार्यक्रम म्हारो रंगीलो राजस्थान का सफल आयोजन किया गया। उद्घाटन मारवाड़ी सम्मेलन के प्रदेश अध्यक्ष श्री विजय कुमार किशोरपुरिया ने दीप प्रज्जवलित कर किया।

पटना नगर शाखा द्वारा ८ जनवरी २०१२ को स्थानीय न्यू पटना क्लब के प्रांगण में राजस्थानी कार्यक्रम पधारो म्हारे देस का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन बिहार सरकार के मंत्री श्री नन्दकिशोर यादव ने किया।

कार्यक्रम में एकल नृत्य प्रतियोगिता आयोजित कि गई, जिसमें सभी बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

१५ **जनवरी** २०१२ को छपरा शाखा के आतिथ्य में कार्यकारिणी समिति की बैठक हुई।

दौरा - भूतपूर्व अध्यक्ष श्री रामपाल अग्रवाल नूतन द्वारा शाहपुर पटोरी, दलसिंह सराय, समस्तीपुर, रोसड़ा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बद्री प्रसाद भीमसरिया तथा रामावतार पोद्दार द्वारा मसौढ़ी, महामंत्री श्री राजेश बजाज एवं श्री सुशील गुप्ता (चेयरमैन मीडिया प्रकोष्ठ) द्वार सीवान, छपरा, हाजीपुर, गोपालगंज, मीरगंज, बरौली, सिधवालिया, गोरौल, भगवानपुर,

सराय, बेतिया, मोतिहारी, बाराचकिया, सीतामढ़ी, जनकपुर रोड, मधुबनी, सकरी, दरभंगा तथा कोशी प्रमंडल के उपाध्यक्ष श्री जुगलकिशोर अग्रवाल द्वारा गणपतगंज, प्रतापगंज, सिमराही शाखा का दौरा किया गया है।

वृक्ष वितरण : हरित विहार अभियान हेतु निःशुल्क पौधा वितरण का कार्यक्रम निरंतर जारी है।

आर्थिक सहयोग : कंकड़बाग स्थित बालिका नेत्रहीन विद्यालय में पानी की सुविधा के लिए मोटर पम्प लगाने हेतु सोलह हजार रूपये का आर्थिक सहयोग किया गया है। झाझा एवं आरा के कैंसर रोग से पीड़ित रोगी को सम्मेलन की ओर से आर्थिक सहयोग किया गया।

पटना नगर शाखा द्वारा ०३ मार्च को श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल में हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन पटना के सांसद माननीय श्री शत्रुघन सिन्हा के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

साईकिल रेस प्रतियोगिता : "विहार शताब्दी वर्ष" एवं "नारी सशक्तिकरण" के अवसर पर २० मार्च २०१२ को गाँधी मैदान, पटना में बालिकाओं की साईकिल रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

टाटा इन्टरनेशनल, वी० एम० डब्लू वेंचर्स लि० एवं पटना नगर शाखा के सहयोग से ३०० साईकिल प्रतियोगी बालिकाओं को दी गई। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा को नगद पुरस्कार भी दिया गया।

कार्यक्रम में विहार सरकार के मंत्री सुखदा पाण्डेय, आर० के० सिन्हा सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

सूचनासार - २

उच्च शिक्षा हेतु सम्मेलन ने दिये २.५० लाख रुपये

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की उच्च शिक्षा कमेटी के चेयरमेन श्री प्रह्लादराय अग्रवाल, सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, महामंत्री श्री संतोष सराफ, संयुक्त मंत्री श्री संजय हरलालका, श्री कुंजविहारी अग्रवाल ने लेकटाउन निवासी प्रियंक भुतोड़िया को उच्च शिक्षा हेतु २.५० लाख का ड्राफ्ट सौंपा। प्रियंक ग्रेटर नोएडा स्थित श्रद्धा इंस्टीच्यूट में दांत के डाक्टरी की पढ़ाई कर रहे है। चार वर्ष के इस सत्र की पढ़ाई में यह उनका तीसरा वर्ष है। आगामी सोमवार से उनकी परीक्षा है। आर्थिक अभाव में वे इस परीक्षा में बैठने से वंचित रह जाते।

गौरतलब है कि गत सितम्बर २०१० में सम्मेलन के कौस्तुभ जयंती समारोह में राष्ट्रपति श्रीमती प्रतभा देवीसिंह पाटिल की उपस्थिति में उच्च शिक्षा के इस कोष की घोषणा तत्कालीन अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा ने की थी। इस कोष के गठन का मुख्य उद्देश्य समाज के जरूरतमंद व प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को सहायता प्रदान करना है। ●

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

मारवाड़ी शिक्षा विकास ट्रस्ट, ओड़िशा

(उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, ओड़िशा का एक उद्यम)

माननीय श्री सुरेन्द्र लाठजी, पूर्व सांसद (राज्य सभा) के द्वारा प्रांतीय अध्यक्ष का पदभार लेने के बाद हमारे समाज की छवि व उन्नति के लिए कई महत्वपूर्ण कार्यक्रमों को लिया गया जैसे कि संगठन एवं शाखा विस्तार, संविधान, शिक्षा कोष, स्वास्थ्य सेवा, अपनी पहचान (वेबसाइट), जनगणना आदि। इन सारे कार्यक्रमों में हम आगे बढ़ रहे हैं। पुरी, भुवनेश्वर, बरगढ़, राउरकेला आदि स्थानों पर हुई विभिन्न बैठकों में श्री अशोक कुमार जालान की संयोजना में एक कमिटी का गठन किया गया एवं "मारवाड़ी शिक्षा विकास ट्रस्ट, ओड़िशा" नामक एक स्वतंत्र ट्रस्ट बनाकर "शिक्षा कोष" की स्थापना का निर्णय लिया गया। इस कमिटि में श्री मनसुखलाल सेठिया-भुवनेश्वर, श्री हरि किशन अग्रवाल-राउरकेला, श्री ओमप्रकाशजी पोद्दार-झारसुगुड़ा, श्री मगनलालजी अग्रवाल - बलांगीर, श्री किशनलालजी भरतिया--कटक, श्री गौरी शंकर जी अग्रवाल-राउरकेला, श्री आर. पी. गुप्ता-राउरकेला, आदि व्यक्तिगणों ने मिलकर तथा समय-समय पर विभिन्न बैठकों में श्री सुभाष सितानी-ब्रजराजनगर, श्री संतोष पारीक-राउरकेला, श्री गणेश प्रसाद कन्दोई-कटक, श्री विनोद चौधरी-भुवनेश्वर, श्री ओमप्रकाश अग्रवाल-तुपरा, श्री सज्जन सुरेका-भुवनेश्वर, श्रीमती सम्पत्ति मोड़ा-कटक, श्री विजय टिवड़ेवाल-भुवनेश्वर एवं कई अन्य व्यक्तियों के सुझावों को मद्दे नजर रखते हुए एक ट्रस्ट डीड का प्रारूप तैयार किया गया।

इस ट्रस्ट को माध्यम से कई प्रकार की छात्र-वृत्तियाँ, मेधावी छात्र-छात्राओं का सम्मान, ट्रेनिंग, लाइब्रेरी, छात्रावास, बैंक लोन एवं कैरियर काउंसलिंग तथा रूग्ण शैक्षिक संस्थानों का पुनरुत्थान आदि कार्यक्रमों को इसके प्रारूप में लिया गया है। सहयोगियों द्वारा अपने पूर्वजनों की स्मृति में रनिंग स्कॉलरशिप आदि सेवाओं का भी प्रावधान है।

यह सूचित करते हुए बड़ी प्रसन्नता होती है कि भुवनेश्वर, झारसुगुड़ा एवं सम्बलपुर की कार्यकारिणी की बैठकों में कार्यक्रम के ऊपर चर्चा के दौरान ही कई महानुभावों ने अपनी ओर से शिक्षा कोष के लिए अनुदान राशि देने की घोषणा की, जिनमें से निम्नलिखित महानुभावों से राशि प्राप्त भी हो चुकी है जिनका हम पूरे समाज की ओर से स्वागत एवं हार्दिक अभिनन्दन करते हैं -

श्री अशोकजी जालान, सम्बलपुर - १.११ लाख
श्री बेदप्रकाशजी अग्रवाल, बलांगीर - १.०० लाख
श्री रघुवीर प्रसादजी लाठ, झारसुगुड़ा- १.१० लाख
श्री मोतीलालजी अग्रवाल, बरपाली - ०.११ लाख
श्री बजरंगलालजी अग्रवाल, बलांगीर - ०.११ लाख

भवानीपटना के श्री सूरजभान जैन ने २ लाख का फिक्स्ड डिपोजिट करके उसका ब्याज हर साल शिक्षा कोष में देने की घोषणा की है।

वर-वधू परिचय :

विकास लोहिया कद : ५'-७", उम्र : ३३, शिक्षा : बी,कॉम (ऑनर्स), गोत्र : गर्ग, सम्पर्क पिता : श्री विनोद लोहिया (राँची निवासी) फोन : ०९८३५४६६७६१

स्थायी समिति की बैठक

बुराईयों से चिंतित है मारवाड़ी सम्मेलन

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थायी समिति की बैठक ब्रेबोन रोड स्थित उनके कार्यालय में सम्मेलन के उपाध्यक्ष रामअवतार पोद्दार की अध्यक्षता में हुई। बैठक में श्री पोद्दार ने समाज सुधार की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि समाज में नित जन्म ले रही नई-नई बुराईयाँ चिंता का विषय है। पुरानी बुराईयों का तो निवारण हो ही नहीं रहा है और समाज नई बुराईयों की ओर अग्रसर हो रहा है जिसमें मुख्य है विवाह समारोह में कॉकलेट पार्टियाँ। पूर्व अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने कहा कि हमें सिर्फ यह निर्णय लेना चाहिए कि ऐसी पार्टियों का हम सांकेतिक विरोध करेंगे। इसके तहत विवाह जैसे मांगलिक अवसरों पर होने वाली कॉकलेट पार्टियों में न जाने का निर्णय लें तथा इससे संबंधित पक्ष को अवगत अवश्य कराएँ। जिससे उन्हें यह मालूम पड़े कि किस कारणवश नहीं आये। कोषाध्यक्ष श्री सोंथलिया ने वित्तीय स्थिति की जानकारी दी। उपस्थित सदस्यों ने विवाह समारोह के अलावा अन्य कार्यक्रमों में भी रूढ़िवादी परंपरा एवं दिखावे व प्रदर्शन का मुद्दा उठाते हुए कहा कि सम्मेलन को इस दिशा में भी चिंतन करते हुए कदम उठाना चाहिए। संयुक्त महामंत्री संजय हरलालका ने धन्यवाद दिया। बैठक में संयुक्त मंत्री कैलाशपति तोदी, सर्वश्री जुगलकिशोर जैथलिया, एडवोकेट नंदलाल सिंहानिया, विश्वनाथ सिंहानिया, जयगोविंद इन्दौरिया, विश्वनाथ भुवालका, नंदकिशोर अग्रवाल, ओम लड़िया, रामनिवास चोटिया, प्रेमचंद सुरलिया, राजेश पोद्दार, प्रमोद गोयनका, मनमोहन गाड़ोदिया सहित अन्य सदस्य उपस्थित थे।

सूचनासार - ३

बिहार के उप-मुख्य मंत्री सुशील मोदी का कोलकाता में स्वागत

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का प्रतिनिधि मंडल बिहार के उप मुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी से मिला। प्रांतीय सम्मेलन के अध्यक्ष विजय गुजरवासिया ने स्मृति चिन्ह एवं डायरेक्टरी भेंट कर सम्मानित किया। सचिव रामगोपाल बागला ने सम्मेलन के भावी कार्यक्रम की जानकारी दी। श्री मोदी ने सम्मेलन के सेवा कार्यो पर संतोष प्रकट किया एवं दिन प्रतिदिन सेवा कार्य बढ़ाने की आशा प्रकट की। श्री मोदी ने बंगाल के उद्योगपतियों से बिहार में उद्योग लगाने की अपील की। इस मौके पर सर्वश्री प्रह्लादराय गोयनका, गगन गोयनका, कृष्ण कुमार सिंघानिया, सूर्यप्रकाश बागला, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राम अवतार पोद्दार, शिवकुमार अग्रवाल, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष आत्माराम सोंथलिया आदि उपस्थित थे।

बिनोद अग्रवाल

रेल एवं टेलिफोन सलाहकार समिति में नियुक्त

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की अखिल भारतीय समिति एवं राजनैतिक चेतना उपसमिति के सदस्य श्री विनोद कुमार अग्रवाल को भारत सरकार ने पूर्व रेलवे एवं टेलिफोन उपभोक्ता समितिओं एवं इस्पात उपभोक्ता खास विभाग द्वारा फूड कारपोरेशन की सलाहकार समिति ने नियुक्त किया। श्री अग्रवाल झारखण्ड प्रान्त के राजमहल के निवासी है एवं सक्रिय राजनैतिक कार्यकर्ता हैं।

सूचनासार - ४

भवन निर्माण उप समिति की बैठक

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की भवन निर्माण उपसमिति की बैठक शनिवार, १९ मई २०१२ को सायं ७ बजे उपसमिति की चैयरमेन श्री द्वारका प्रसाद डावड़ीवाल की अध्यक्षता में हुई। चैयरमेन श्री द्वारका प्रसाद डावड़ीवाल ने बताया कि म्यूटेशन का कार्य हो चुका है। बैठक में कोलकाता नगर निगम के नये कानून के मुताबिक नये नक्शे की समीक्षा की गई उसे नगर निगम में जमा करने का निर्णय लिया गया। भवन का प्लान नगर निगम में जमा करने संबंधित जिम्मेदारी श्री द्वारका प्रसाद डावड़ीवाल एवं श्री रामअवतार पोद्दार को दी गई कि वे आर्किटेक्ट से बात कर इस कार्य को आगे बढ़ायें। भवन निर्माण उपसमिति की आगामी बैठक के पूर्व भवन निर्माण का बजट बनाने का निर्णय भी इस बैठक में लिया गया।

बधाई :-

सिमरण अग्रवाल

दि असम वैली स्कूल, बालीपाड़ा, शोणितपुर की छात्रा सिमरन अग्रवाल ने ICSE की दसवीं की परिक्षा 93.8% अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की है। सिमरन ने स्कूल भर में दो विषयों में पर्यावरण शिक्षा – ९९ एवं अंग्रेजी – ९४ अंक हासिल कर सर्वाधिक अंक का खिताब पाया है। सिमरन नगाँव निवासी सीमा-नरेन्द्र डाबरीवाल की सुपुत्री एवं शकुन्तला-नेमचन्द डावड़ीवाल की सुपौत्री है।

बधाई :-

सुमित अग्रवाल

सुमित का मिला द्वारिका प्रसाद चमेली देवी पुरस्कार

जूनागढ़ : इस वर्ष मैट्रिक परीक्षा में जयपटना सरस्वती शिशु विद्या मन्दिर का सुमित अग्रवाल ५७१ मार्क पा कर राज्य में तेरहवाँ स्थान तथा जिला में प्रथम स्थान हासिल किया। सुमित, श्री बाबूलाल अग्रवाल का पोता तथा श्री मुरारी लाल अग्रवाल व श्रीमती अनीता अग्रवाल के बेटा है।

SMS की दुनिया

एक खुबसूरत सोच,
दूसरों की इतनी जल्दी माफ कर दिया करो
जितनी जल्दी आप ऊपरवाले से
अपने लिये माफी की उम्मीद रखते हो

छोटे से दिल में गम बहुत हैं
जिन्दगी में हर पल मिलते जख्म बहुत है
मार डालती कमबख्त दुनिया कब की मगर
प्रभु की कृपा में दम बहुत है।

Must call Aamir's first wife
too on the show to discuss,
"How her husband deseted her
with two small kids for Kiron?
जय बोलो, सत्यमेव जयते!

गुगल चैयरमेन की तनय खण्डेलवाल को बधाई

२२ वर्षीय तनय खण्डेलवाल, जिन्होने बोस्टन विश्वविद्यालय से एम.डी.ए. किया है, की प्रतिभा से प्रभावित गुगल मे चैयरमेन एटिक सीमिड्ट ने उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए बधाई दी है। तनय जयपुर निवासी सुप्रतिष्ठित खण्डेलवाल के पौत्र है। तनय ने टोकियो, जापान मे खूली शिक्षा प्राता की है। तनय ने आभुषणों पर विशेष अध्ययन किया है एवं टोकिया स्थित रेड जेमस के अध्यक्ष है।

viom
NETWORKS

A Leading Telecom Infrastructure Company Globally

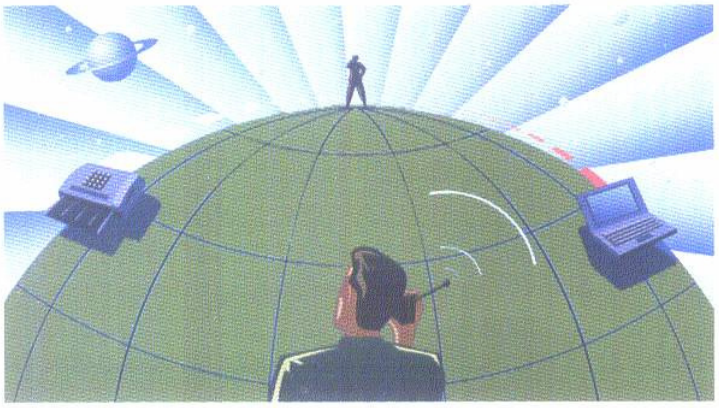

Independent entity with over 38,000 towers and over 89000 tenants

Plans to roll-out nearly 20-25,000 additional towers and take tenancy ratio to 2.5x

Strongest player in neutral host Shared In-Building Solutions (IBS)

First Indian Telecom Infrastructure Company to receive ISO 14001 & OHSAS 18001 Certification

Viom Networks Limited
Corporate Office : 14 & 15th Floor, DLF Square, Jacaranda Marg, DLF City, Phase 2, Gurgaon - 122 002. India

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2010-2012
Date of Publication - 28 July, 2012
RNI Regd. No. 2868/68

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : aimf1935@gmail.com